मासिक—

मानव मन्दिर

संरक्षक :
परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :
सेठ दुर्गादासजी

२	मार्च १९७६	संख्या ११

सतसंग का प्रभाव

लेखक—सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़।

कितने ही लोग सत्संगों में पड़े रहते हैं। रात दिन सुबह शाम सत्संग करते हैं। सन्तों के दर्शन करते हैं, उनकी सेवा करते हैं, प्रशाद लेते हैं। मगर उनको सत्संग से कोई लाभ नहीं होता। इनका जीवन नहीं बदलता। इनकी आदत नहीं बदलती। सवाल पैदा होता है कि ऐसा क्यों? इस सवाल पर मैं सोचने को विवश हुआ।

भगवान राम का अवतार हुआ तो राक्षस भी मौजूद थे। कृष्ण भगवान प्रकट हुए तो कंस आ गये। चिराग के साथ अंधेरा। यह सिद्धान्त तो ठीक है। भलाई के साथ बुराई रहेगी लेकिन क्या सन्तों के साथ भी यही हो रहा है। एक सन्त सत्गुरु का भाई ज्वारी था। जीवन भर जुआ खेलता रहा। एक और सन्त का लड़का दुराचारी हो गया। क्या सन्तों के दरबार में भी ये बराइयां रहतीं हैं? क्यों।

हर एक जीव की प्रकृति अलग अलग होती है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

जीव को तीन प्रकार की प्रकृतियों में बांटा जा सकता है :—

सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ।

सतोगुणी पुरुष सचेत, शरीर के हल्के और बड़े बुद्धिमान होते हैं । इनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है । बाणी मीठी और रसीली होती है । हर एक बात इशारों २ में भांप जाते हैं । आदतों पर कंट्रोल रखते हैं । इनको किसी के विरुद्ध शिकायत नहीं होती । इनका भोजन सात्विक और हल्का होता है । इनकी हंसवृति होती है ।

तमोगुणी जीव शरीर के भारी, बाणी भारी, मूढ़ वृति और सुस्त होते हैं । इनका भोजन अधिक भारी और तामसिक होता है । आत्म ज्ञान का समझना इनको कठिन होता है । आदतों पर काबू नहीं होता । जो प्रकृति उनकी बन चुकी है । इसमें मस्त रहते हैं । सत्संग और कथावार्ता में नींद आने लगती है । इनकी वृति कभी एकाग्र नहीं होती । इनके मन गन्दे और विचार गन्दे रहते हैं । शारीरिक अवस्था में अटके रहते हैं । इनकी कागवृति होती है ।

तीसरे रजोगुणी होते हैं । ये बीच के लोग हैं ।

बड़े चुस्त चालाक और बुद्धिमान होते हैं। इनकी उन्नति का रास्ता शीघ्र खुल जाता है। संघर्ष करते हैं और सफल होते हैं।

इन तीनों गुणों के अलावा जन्म के संस्कार, बीज और माता पिता से लिए हुए संस्कार का भी बहुत प्रभाव होता है।

१. कुल के बीज का प्रभाव कभी नष्ट नहीं हुआ करता। मीरासी की संतान कभी पंडित नहीं हो सकती। मिर्च के बीज से मिर्च ही पैदा होगी चाहे पहाड़ों की किसी ऊंची चोटी पर चाहे समुन्द्र के नीचे बो दो, चाहे खांड की खाद दे दो, इस पर कड़वी मिर्च ही लगेगी। मीठा गन्ना कभी न लगेगा।

२. जन्म के संस्कार प्रभाव अवश्य रखते हैं। परम दयाल फकीर चन्द जी महाराज ने बताया कि जब वह फिरोज़पुर में रहते थे, उनके पड़ौस में एक बच्चा पैदा हुआ। वह हर समय रोता रहता था। इसके पिता जी बच्चे को महाराज जी के पास ले आये और उसके रोने के बन्द होने के लिये प्रार्थना की। महाराज जी ने कहा कि डाक्टर को दिखाओ। उन्होंने कहा कि हर प्रकार की दवा कर चुके हैं।

डाक्टर कहता है कि इसको कोई रोग नहीं। तब महाराज जी ने कहा कि यह बताओ कि जिस नर्स (दाई) ने बच्चे की पैदाईश की थी उसकी दशा क्या थी। मालूम हुआ कि उस नर्स का भाई उस दिन मरा था। वह रंज में थी। रो रही थी। उसी दशा में बच्चे की पैदायश के लिए आई।

यह है शरीर का संस्कार, रोने पोटने का संस्कार बच्चे पर इतना अधिक हुआ कि उसका रोना बन्द नहीं होता था। माता पिता के संस्कार जीव पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। यदि घोड़ी के बच्चे का पालन भैंस का दूध पिला कर किया जाय तो घोड़ी के बच्चे में भैंस की आदत आ जायेगी। भैंस पानी का पशु समझा जाता है। जब इस घोड़ा के बच्चे पर सवारी की जायेगी और पानी पार करना होगा तो वह अपने सवार के साथ पानी में बैठ जायेगी।

पिता पर पूत, घोड़े पर घोड़ा, बहुत नहीं तो थोड़ा थोड़ा।

४. जो स्वार्थी हैं उनको सिवाय अपने स्वार्थ के और कुछ नहीं सूझता। स्वार्थी अन्धा होता है।

एक सज्जन स्कूल टीचर रह चुके हैं, विवाहित हैं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सेवा में आ गये। सेवा में दिन रात एक कर दिया। ए टांग पर खड़े रहते, जो देखता हैरान हो जाता। पांव दवाते, खाना खिलाते, सत्संग करते, प्रशाद लेते एक दिन कहा कि दो हजार रूपये की वड़ी आवश्यकता है, दे दीजिये। धीरे धीरे २०० रुपये तक आ गये। रुपया न मिलने के कारण निराश हो गये। वह चले गये। वहां से उनको चिट्ठी आई कि उनका एक लड़की से प्रेम हो गया है आदि आदि।

सन्तों की संगत का इस पर कोई प्रभाव न हुआ क्योंकि उसकी नीयत में परमार्थ नहीं था। वह स्वार्थी था। यद्यपि सत्संग की बड़ी महिमा गाई गई है। यह है भी ठीक। मीराबाई के जीवन का अध्ययन्न करो। धन्ना जट ने क्या कुछ किया। भक्तों की कथा पढ़ो। हैरान हो जाओगे। कहा जाता है—शठ सुधरहि सत्संग पाई। गुरु करलें आप समान। स्वर्ग लोक खाली पड़ा साहब सन्तों पास। असली बात यह है कि सत्संग के लिए अधिकारी चाहिए। बिना अधिकार के सत्संग का प्रभाव नहीं हो सकता। अधिकारी ही सत्संग से लाभ उठा सकता है।

भला एक जालिम, बूचड़ का सत्संग से क्या मेल हो सकता है। इसलिए ऐसे जीवों पर सत्संग का कोई प्रभाव नहीं हुआ करता। कबीर साहिब कहते हैं।

जान बूझ सांची तजे, करे झूठ से नेह।
ताकी संगत राम जी, सपनेहू मत देह॥

कबीर साहिब नहीं चाहते कि ऐसा जीव इसके सत्संग में या उनके पास आये। ऐ राम ! ऐसे जीव से मेरी संगत न हो, जो सच को छोड़कर झूठ से प्यार करे।

ऐसे भी जीव देखे गये हैं जो हमेशा सत्संग करते हैं। दर्शन करते हैं, पास रहते हैं, परशादी लेते हैं किन्तु ढाक के वही तीन पात, कभी फल न लगा।

बर्षों की आदत बन चुकी हैं बदलती नहीं। परन्तु लोग कान के रसिये हैं। इस कान सुना उस कान निकाल दिया। सत्संग इनके लिये एक विषय बन चुका है।

सत्संग का प्रभाव तो सत्संगी की रहनी से लगेगा। कबीर साहिब कहते हैं कि जब जीव बीमार हो किसी बुरी आदत में फंसा हो, आदत भी एक बीमारी है,

तो ऐसे जीव पर सत्संग का प्रभाव नहीं हुआ करता, तमोगुण स्वार्थ, ये सब बीमारीयां हैं। जिनसे जीव घिरा हुआ है। जीव की प्रकृति का बदलना बड़ा कठिन है। ऐसे जीव के बारे कबीर साहिब कहते हैं। कि ऐसे जीव संसार में होते हैं जिन पर सत्संग का कोई प्रभाव नहीं हुआ करता :-

साखी शब्द वहुतक सुना, मिटा न मन का दाग।
संगत से सुधरे नहीं, ताका बड़ा अभाग ॥
कबीर संगत साधु की जो कर जाने कोय।
सकल वृक्ष चन्दन भये, बांस न चन्दन होय ॥
मलियागिरि के बास में, बीधे आक पलास।
वांस कबहुं न वीधिया, रहा जुगन जुग पास ॥
मलियागिर के पेड़ से, सर्प रहे लिपटाय।
रोम रोम विष में भरा, अमृत कहां समाय ॥
चन्दन जैसे सन्त हैं, सर्प जैसे संसार।
वाके अंग लिपटा रहे, भागे नहीं विकार ॥
लहसन से चन्दन डरे, आन विगाड़े वास।
सगुरा निगुरा से डरे, जग से डरपै दास ॥
मूरख को समझावते, ज्ञान गाठ का जाय।
कोयला होय न ऊजला, चाहे सौमन साबन लाय।

कबीर साहिब का कथन है कि सन्तों की संगत का प्रभाव हर एक व्यक्ति पर नहीं हुआ करता।

बांस कभी मलियागर नहीं हुआ। सर्प ने कभी विष नहीं खाया। लहसन अपनी गंध नहीं छोड़ता। कोयला कभी उजला न हुआ। यह संसार है। संसार ही रहेगा। जब मन संसार के पदार्थों और वासनाओं से भरपूर है तो वहां परमार्थ के लिए जगह ही नहीं है। फिर सत्संग का ऐसी दशा में क्या प्रभाव होगा।

हाँ यह ठीक है कि मैला कपड़ा ही धोबी के घाट पर जायेगा। लेकिन मैले कपड़े को धोबी लकड़ी या पत्थर के टुकड़े के ऊपर जोर जोर से मारता है तब मैल जाता है। ऐसे गन्दे जीवों के लिए भगवान राम और कृष्ण का अवतार होता है। वह ऐसे जीवों का सुधार तलवार से करते हैं। सन्त तो दयालु होते हैं। दया से बचन से जीवों का सुधार करते हैं। जो धोबी के घाट पर धोये जा चुके हैं, मैल निकल चुका है, रंग स्वच्छ हो चुका है, सन्त तो ऐसे जीवों को भक्ति, ज्ञान और अनुभव के रंग में रंग देते हैं और रंग जल्दी चढ़ जाता है। अन्यथा लहसन से चन्दन डरे, आन बिगाड़े बास, वाली बात बिल्कुल ठीक है। चन्दन सन्त हैं और लहसन कुकर्मी जीव हैं। कुकर्मी जीवों से सन्त भी डरते हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सन्तों को ज्ञान होता है कि कौन से जीव मैले, गन्दे और कुकर्मी हैं। उनकी ओर ध्यान नहीं देते क्योंकि अभी वे धोबी के घाट पर नहीं गये अर्थात काल भगवान ने इनका अभी सुधार नहीं किया। काल भगवान को इन पर सख्तियां नहीं आई। इसलिये सन्त कहते हैं :-

मूरख को समझावते, ज्ञान गांठ का जाय।
कोयला होय न उजला, चाहे सौमन साबन लाय।।

हजूर परम दयाल जी महाराज की मानव मन्दिर के पाठकों के लिये नये वर्ष की शुभ कामनायें ।

गाओ री सखी जुड़ मंगल बानी ।
आज पिया मेरे दीन्ह निशानी ।।

घट में घाट द्वार में चीन्हा । प्रेम पदारथ छिन छिन लीन्हा ।।
मन चढ़ चला छोड़ तन थाना, गगन महल पर उमंग समाना ।
तंह से सुरत चली होय न्यारी, सुन्न नगर का शब्द पिछाना ।।
क्या कहूं महिमा बरनी न जाई, काल करम दोउ हुए दिवाना ।
मैं पिया की अपने सुध पाई, घाट घाट पर जोत जगाई ।।
भागा तिमर हुआ अजियारा, चौक चांदनी द्वार निहारा ।।
सोभा महल कहां लग बरनूं, कुंगरे कंगरे सूर हजारा ।।
आगे बाट चली नहीं मेरी, राधास्वामी करो निबेड़ा ।।
घट का परदा खोल रे, घट जगत पसारा ।।
घट में कासी घट में फांसा, घट में जम का द्वारा ।
घट में ज्ञान ध्यान सन्यासी, घट में ही निस्तारा ।।
घट में घट को तोल रे, घट अगम अपारा ।
घट में ब्रह्मा वेद विचारे, घट में विष्णु करतार ।
घट में शिव संसार संहारे, घट शक्ति की धारा

घट में शब्द अनमोल रे, घट का लेउ सहारा ।।
घट का घाट पाट पहिचानो, पिंड देस दस द्वारा।
घट में खेल खिलाड़ी जानो, घट है जीत और हारा ।।
घट के बीच तू डोल रे, घट सब से न्यारा ।
घट में अटपट घट में सटवट, घट में मोह अहंकार ।
घट में घटपट घट में चटपट, घट में ब्रह्मा उचारा ।।
घट की बाणी बोल रे घट अधिक पियारा ।।
घट की निरख परख रखबारी. घट का करे विचारा ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, घट का खुला किवारा ।
वाजत अनहद डोल रे, घट चमका तारा ।।

राधास्वामी ! आज नया साल है। जो कुछ इन शब्दों में लिखा हैं वही मेरी दशा है। आयु बीत गई घर को खोजते खोजते। बहुत अभ्यास किया। बहुत कुछ देखा और सुना। आगे क्या है ? वहां जाना चाहता हूं। इसके आगे मेरी अपनी ज़ात है और वही घट में आने से पहले थी। पता नहीं उसमें कब गुम हूंगा। घट बहुत देख लिया। अनुभव किया। पंथ देखा। बाल की खाल निकाली। आगे क्या होगा ? यह मालिक जानता है। हजूर महाराज जी ने भी लिखा है :-

आगे बाट चलो नहीं मेरी राधास्वामी करो निवेड़ा ।।

मैं भी यही कहा करता हूं कि घर का पता लग गया। मेरा घर या मेरा आदि क्या है ? अनामी धाममे

जहाँ न मैं है और न तू है, न गुरु हैं और न चेला हैं, आज नया साल है। दोस्तो। मेरे साहित्य को पढ़ने वालो॥ मैं सोचता हूं कि मैं किसी के लिए क्या कर सकता हूं ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने जीवों के कल्याण और निबल अबल अज्ञानी लोगों की सहायता करने की आज्ञा दी थी। इस घाट का सफर करते हुए जो कुछ मेरी समझ में आया वह मैंने कहा, मगर मुझे किसी बात का दावा नहीं है। हजूर महाराज जी नें भी यही फरमाया है कि आगे पता नहीं क्या हो। राधास्वामी दयाल जी निबेड़ा करेंगे। लेकिन मैं तो यह समझता हूं कि हमारी आद अवस्था वह है जहां न पिंड रहें, न अंड रहे, न ब्रह्मण्ड रहे, न प्रकाश रहे और न शब्द रहे। क्या रहे ? खामोशी। इस अनुभव के आधार पर मैंने यह समझा है कि जीवन क्या है :-

लब खुले और बन्द हुये यह राज जिन्दगानी है।

उसकी मौज से प्रकृति अनुसार केन्द्र बन जाते हैं, कहीं इन्सान है, कहीं हैवान' है कहीं प्रिन्द, हैं कहीं पृथ्वी है, कहीं चान्द है और कहीं सूर्य है। वह खेल खिलाता है। फिर समय आता है और वह केन्द्र टूट जाता है।

उस अवस्था की मुझे तलाश है। तलाश करते करते बुढ़ापा आ गया। मुझे जो कर्त्तव्य मिला है आज्ञावश अपना अनुभव कहता रहता हूं। अव कर्म का चक्कर बाहर लिये जा रहा है। उसकी इच्छा।

नया साल सबको मुबारिक हो। आपका घट अच्छा रहे। खाने को रोटी मिले, पहनने को कपड़ा मिले और रहने की मकान मिले और जीवन आराम से व्यतीत हो। यह सच्चे दिल से प्रार्थना है। आप लोग मुझे गुरु मानते हैं और प्रेम करते हैं जो अनुभव किया वह कहता हुआ आ रहा हूं। अब अन्तिम मंज़ल है। प्रतीक्षा करता हूं कि कब खेल समाप्त हो। फिर न तू रहे न मैं रहे, न पंथ रहे, न पंथाई रहे, न ईश्वर रहे, और न परमेश्वर रहें :-

तू मबाश असला कमाल ईं अस्तो बस।
तू दरोगुम शिव विसाल ईं अस्तो बस ॥

आज का यही संदेश है। नया साल सबको मुबारिक हो।

जो दशा हजूर महाराज की थी वही मेरी है। बहुत अभ्यास किया और बहुत दौड़ा। आगे क्या है।

मैं समझ तो गया मगर अभी तक मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता ।

सब को राधास्वामी ।

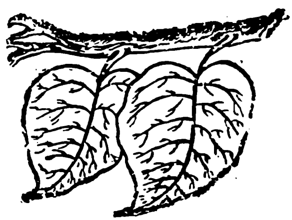

गुरूमत सुधार

सत्संग हज़ूर परम दयाल जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।
दिनांक ३ नवम्बर १९७४

राधास्वामी ! मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुम यह सत्संग का काम क्यों करते हो ? मैं एक साधारण हिन्दु हूं। ब्राह्मण के घर में जन्म हुआ। मैं ईश्वर परमेश्वर, राम कृष्ण और देवी देवताओं को मानने वाला था। मालिक को मिलने की तलाश के सिलसिले में मेरा एक दृश्य मुझे हज़ूर दाता दयाल महार्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने मुझे राधास्वामीमत या सन्तमत की शिक्षा दी। इनकी बाणियों में सब मत मतान्तरों का खण्डन था और उन्होंने एक नई चीज बताई। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। मैं लगभग ३६-३७ साल से यह

काम कर रहा हूं । पिछली बार मैं यहां आया उस समय सन्त कृपाल सिंह जी महाराज चोला छोड़ गये थे । उनके बाद वहां दो पारटियें बन गईं । एक पारटी कहती है कि उनका लड़का गुरु है क्योंकि वह जीवित अवस्था में यह आज्ञा दे गए थे और दूसरी पारटी कहती है कि उनका लड़का गुरु नहीं है । सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने अपने जीवन में कभी ऐसी आज्ञा नहीं दी । ऐसे ही दूसरी कई गद्दियों में भी झगड़े पड़े । आजकल गुरुमत का ज़ोर है । जीव निबल अबल अज्ञानी हैं । उनको गुरुमत की समझ नहीं है ।

आज प्रातः मेरे पास एक आदमी आया और कहने लगा कि महाराज जी ! रात को आपने मुझे खुश कर दिया । मैंने पूछा क्या हुआ ? वह कहने लगा कि रात को मैंने एक बहुत बड़ा चान्द देखा और उसमें आप सत्संग करा रहे थे । बहुत लोग एकत्र थे । सत्संग में आपने यह कहा और वह कहा । ऐसे ही और लोगों के अन्तर भी मेरा रूप प्रकट होता है, सन्त कृपाल सिंह जी, हजूर बाबा सावन सिंह जी, राम कृष्ण या किसी देवी देवते का रूप प्रकट होता

रहता है। कई प्रकार के दृश्य दिखाई देते हैं और संसार यह समझता है कि जिनके रुप उनके अन्तर प्रकट होते हैं, वे गुरु हैं। उनको मत्थे टेकते हैं और अपनी सम्पत्तियें उनको भेंट करते हैं। इस वास्ते आज कल गुरुमत अधिक फैला है। मेरे पीछे भी लोग फिरते हैं। क्योंकि उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। किसी को पुत्र दे जाता है, किसी को दवाई बता जाता है और किसीका पर्चा हल करा जाता है आदि आदि। लेकिन मैं नहीं होता और न ही मुझे कोई पता होता है। ऐंसे ही ये दूसरे गुरु लोग भी नहीं होते। जिस प्रकार का संसार को विचार दे दिया जाता है, लोगों के विश्वास और श्रद्धा के अनुसार वही विचार रूप धारण करके उनके सामने आता है और उनका काम करता है और गुरु लोग इस भेद को परदे में रखकर लोगों को अपना पशु बनाकर उनको लूटते हैं। यह माई कहती है कि इसका मरा हुआ ससुर इसके स्वप्न में आता है और कहता है कि मैं दुखी हूं। मेरा सत्संग करा दो। अब यह कहती है कि आप उसका सत्संग कर दीजिए ताकि वह इस चक्कर से बच जाये।

मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु। अनामीधाम से इस संसार में फकीर के चोले में इसलिए आया हूं कि जीव निबल अज्ञ और अज्ञानी हैं, इनको भेद का पता नहीं। इनको असलियत बता जाऊं। असलियत या भेद क्या है ? कि तुम्हारे अन्तर जितने भी रुपरंग और शक्लें पैदा होती हैं, यह सब काल और माया है और इनमें असलियत कुछ नहीं। न बाबा फकीर किसीके अन्तर जाता है। न सन्त कृपाल सिंह जी या कोई और गुरु किसी के अन्तर जाता है। यह सब धोखा है। लोग कहते हैं कि गुरु सुरतें चढ़ा देते हैं। यह बिल्कुल गलत बात है। सुनो ! ज़िला रोहतक का एक हवलदार बख्तावर सिंह दो तीन साल हुये मेरे पास होशियारपुर आया और कहने लगा कि महाराज मैंने दस बारह: साल हो गये नाम लिया था। बहुत यत्न करने पर भी न प्रकाश आया न शब्द खुला। पिछले साल दशहरा के अवसर पर आप दिल्ली में सत्संग करा रहे थे, तो मैं भी वहां गया। थोड़ा समय सत्संग सुनने के बाद वहां बैठे २ मेरी सुरत चढ़ गई और मेरा प्रकाश और शब्द खुल गया। मैं अपनें आप से पूछता हूं कि क्या तुम इस से पहले हवलदार

बख्तावर सिंह को जानते थे ? नहीं ! क्या तुमने उसकी सुरत चढ़ाई। नहीं ! अब मैं दौरे पर था। उसके गांव के सत्संगी मुझे वहां ले गए। उस बख्तावर सिंह की टांगे अब नहीं चलती और उसको उठाकर मेरे पास लाए। मैंने उससे कहा कि बख्तावर सिंह। यदि मैं तेरी सुरत चढ़ा सकता होता तो आज मैं तेरी टांगे भी ठीक कर सकता। लेकिन यह मुझमें शक्ति नहीं है।

जिन गुरुओं ने ऐसी बातों को परदे में रखा। सच्चाई नहीं बताई और लोगों को अपने जाल में फंसाया और उनके धन लूटे, वे न सत्गुरु थे और न सन्त थे। मैं यह भापन दिल्ली में समय के सन्त सत्गुर के रूप में दिए जा रहा हूं। हम लोग अज्ञानी हैं और सांसारिक आशाओं में फंसे हुये हैं। जो जो कर्म किसी ने किये हुये हैं वह उनके फल से बच नहीं सकता। स्वामी जी महाराज ने लिखा है ;–

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

जिन महात्माओं ने परदा रखकर लोगों को लूटा और अपनी सम्पत्तियें बनायीं, उनका क्या परिणाम होगा ? यह तो भगवान हो जानता है। जो कुछ मैं ने

जीवन में अनूभव किया है और जिसको ये सब सन्त मेरे सामने ठीक मानते हैं। यदि यह ठीक है तो उनको उनके इस कर्म का फल अवश्य मिला होगा या मिलेगा। यहाँ होशियारपुर में मानवता मन्दिर में श्री पीरे-मुंगां साहिब, भाई नन्दु सिंह जी महाराज, सन्त कृपाल सिंह जी और मैं खड़े थे। हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को फोटो के सामने सन्त कृपाल सिंह जी खड़े थे मैंने उनसे कहा कि यह आपके गुरु महाराज हैं और दूसरी ओर हजूर दाता दयाल जी महाराज का *Statue* था। मैंने कहा कि वह मेरे गुरु महाराज जो हैं। दोनो एक ही रूप हैं। आप सच बताईए कि जब लोगों के अन्तर आपका रूप प्रकट होता है तो क्या आप जाते हैं उनके अन्तर ? उन्होंने कहा कि मैं नहीं जाता। मैंने फिर कहा कि क्या उस समय आपको आपके रूप के प्रकट होने का पता होता है ? उन्होंने कहा कि नहीं ! क्योंकि उन्होंने सचाई बताई इसलिए मैं उनका मान करता हूं। अब वह तो चोला छोड़ गए और उनके सत्संगी इस समय दुःखी हैं कि हमारा पथ प्रदर्शक कौन है। ये सब भूल भरम और अज्ञान में हैं। तुम यह समझते हो कि किसी

सन्त ने तुम्हारी बीमारी को ठीक कर देना है। या तुम को लड़का दे देना है। तुमने अपने विश्वास से ठीक होना है और तुम्हारे कर्म ने तुमको लड़का देना है। जो कुछ भी होगा तुम्हारे विश्वास से होगा, यदि तुम्हारा विश्वास सच्चा है तो तुम्हारी सहायता आवश्य होगी अन्यथा नहीं।

मैं चाहता हूं कि मेरा यह भाषण छपाकर मुफत बांटा जाये ताकि लोगों को पता लगे कि असली गुरु-मत क्या है। गुरु नाम है समझ विवेक ज्ञान प्रकाश और शब्द का। संसार भूला हुआ है। कोई किसी गुरु के और कोई किसी गुरु के पीछे पागल हो के दोड़ता फिरता है। ये सब सांसारिक इच्छाओं के लिए मारे मारे फिरते हैं। क्या सन्त बीमार नहीं होते ? क्या सन्तों के बच्चे नहीं मरे ? माई तो कहती है कि मेरे अन्तर मेरा सुसर आया। जब मैं जीवत बैठा हुआ किसी के अन्तर नहीं जाता तो कैसे मानूं कि कोई मरा हुआ किसी के अन्तर आता है। इस अज्ञान को मिटाने के लिए सन्त कबीर आये, राधास्वामी दयाल आये और दूसरे सन्त आये और लोगों को यह ज्ञान दिया कि ऐ मानव ! तू भूल और भरम में है।

मैं जब यह कहता हूं कि मैं राधास्वामी दयाल हूं या मैं संत कबीर हूं या मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं तो मैं झूठ नहीं कहता। मैं सच कहता हूं क्योंकि जो कुछ उन्होंने कहा वही बात मैं कहता हूं। लेकिन गुरुओं ने सचाई नहीं बताई और लोगों से धन इकट्ठा किया। स्वामी जी की वाणी सुनो :—

देखो गगन के बीच श्याम कंज खिल रहा भंबरा गया लुभाय
वहीं चढ़ के पिल रहा।
धोखे का वह मुकाम उसे देखता रहा। बहु सिद्ध नाथ जोगी
उन्हें देखता रहा।

जो रूप किसी के अन्तर प्रकट होता है चाहे वह बाबे फकीर का है चाहे सन्त कृपाल सिंह जी का है और चाहें वह हजूर बाबा सावन सिंह जी का है। वह क्या है वे संस्कार हैं या *Suggestions & Impressions* हैं जोपढ़ने से, सुनने से, छूने से, देखने से और धार्मिक विश्वास के कारण आदमी के मास्तिषक पर पड़े हुये होते हैं। मेरे साथ ऐसी घटनायें बीती हैं। हैदराबाद में एक महिला सायं काल को बाहर टटी गई। एक लड़की उसके साथ थी। वहां वह बेहोश हो गई। लड़की नें घर में आकर बताया और घर वाले उसको उठाकर ले आये। रात के बारह बजे तक उसे कोई

आराम न आया। किसी सत्संगी ने मेरी फोटो उस स्त्री को दिखायी और कहा कि यह है बाबा फकीर। इसका ध्यान कर। वह स्त्री कहने लगी कि वह भाग गया, वह भाग गया और भाग गया। बाबे ने इसको बहुत मारा अब मैं तो गया नहीं। अब तुम सोचो कि जब मैं नहीं था तो वह भूत भी नहीं था। केवल उस स्त्री के विचार ने भूत दिया।दूसरा विचार बाबे फकीर का ले लिया। उसने भूत को निकाल दिया। और घटना सुनो। हजूराबाद के एक मास्टर की स्त्री को भूत आता था, किसी ने उसको कहा कि स्त्री को नाम दिला दो फिर भूत नहीं आयेगा। उन्होंने भाई नन्दु सिंह जी से नाम दिला दिया। लेकिन वह भूत फिर भी न गया। फिर उनको किसी ने मेरे बारे में बताया। उन्होंने मुझे लिखा। मैं ऐसी बातों के कारण को जानता हूं, मैंने उनको लिखा कि जब भूत आये तो मेरा फोटो उसको दिखा देना। उन्होंने ऐसा ही किया। घर वाले सब मौजूद थे। महिला ऊंचे स्वर से चिल्लाने लगी "मैं नहीं जाता। मैं नहीं जाता" क्या हुआ तू होशियारपुर का दयाल फकीर हैं तो।" वे कहते हैं कि फिर आप प्रकट हुये और मार मार कर भूत को

भगा दिया। उसके बाद फिर भूत नहीं आया। अब उस स्त्री के दो लड़के हैं।

मैं तो गया नहीं। जब मैं नहीं था तो भूत भी नहीं था। एक भ्रम को दूसरे भ्रम ने काट दिया। कोई सच्ची बात तुमको नहीं बताता। इसलिए तुम लुटे जा रहे हो। इसलिए करोड़ों रुपये इन डेरों और धामो में एकत्रित हैं और करोड़ों की सम्पत्तियें बनी हुई हैं :—

क्योंकि मेरे जिम्मे कर्त्तव्य है :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरु के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

मैं जो बचन कहता हूं, यही नाम दान है। मैं दूसरे गुरुओं के चेलों को यह बताना चाहता हूं कि असली और सच्चा गुरुमत क्या है। मन के चक्कर में न आना, और मन को अपने वश में रखना ही गुरु-मत है। जहां से भी यह चीज़ मिले वहां से ले-लो। किसी गुरु ने तुमको पार नहीं करना है। पार तुमको तुम्हारे विश्वास और ज्ञान ने करना है। गुरु नाम है

ज्ञान और अनुभव का। जिससे मिले ले-लो। वह धन्य है। किसलिए भटकते फिरते हो। लेकिन एक आदमी से तो सारा संसार लाभ नहीं उठा सकता। इसलिये जिसको जहां से भी सचाई मिले और ज्ञान मिले वहां से ही लेकर अपने जीवन को बताना चाहिए।

देखो गगन के बीच श्याम कंज खिल रहा।
भंवरा गया लुभाय वहीं चढ़ के मिल रहा।।
धोखे का वह मुकाम उसे देखता रहा।
बहु सिद्ध नाथ जोगी उन्हें पेखता रहा।।
काल अपना जाल एक जुदा ही बिछा रहा।
जो जो गये वहां उन्हें उलटा बतारहा।।

जिसके अन्तर बाबा फकीर प्रकट होके सहायता करता है वह काल सहायता करता है गुरु सहायता नहीं करता। काल तुम्हारा अपना ही मन है। तुम तो क्या सब मतमातान्तर ही भूल गये और भटक गये। किसी को भेद का पता नहीं। काल बुरा शब्द नहीं है। काल तुम्हारा अपना ही मन है और यह अनेक प्रकार के खेल खिलाता है. यह कहीं ज्ञान बन जाता है, कहीं प्रेम बन जाता है और कहीं विचार बन जाता है। यही काल का चक्कर है। सन्तों के

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

मार्ग में मन के रूप को दरसाना है ताकि तुम मन के चक्कर में न आओ। तुम न शरीर हो, न मन हो, न प्रकाश हो और न शब्द हो। मगर तुम इस बात को समझते नहीं हो।

सन्त कृपाल सिंह जी के चोला छोड़ जाने के बाद मेरे पास एक पारटी का पत्र आया कि उनका लड़का गद्दी का अधिकारी है। मैं क्या कहूं। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु और यह बताना चाहता हूं कि ऐ मानव ! गुरु व्यक्ति का नाम नहीं है। गुरु समझ विवेक और ज्ञान का नाम है। जहां से मिले ले-लो और अपना जीवन बनाओ। इन झगड़ों में रखा क्या हैं। जगह २ गद्दियों के झगड़े और धर्मों के झगड़े हैं। इन झगड़ों ने मानव जाति को नष्ट कर दिया है। आज कल देश की दशा देखो। ये लीडर अपने २ स्वार्थ के लिए क्या कर रहे हैं। मरेंगे तो हमलोग इन नेताओं का क्या जायेगा। मैं विवश हूं जो सत्संग कराता हूं। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है।

जो कुछ मैंने कहा है। इसका प्रमाण मैंने स्वामी जी महाराज की वाणी से दिया है :—

काल अपना जाल एक जुदाही बिछा रहा।
जो जो गये वहां उन्हें उलटावता रहा ।।

मन अपना ही जाल बिछाता रहता है। यदि अच्छा विचार ले लिया तो खुश हो जाते हो और यदि बुरा विचार ले लिया तो चिन्तित हो जाते हो। सन्त मन का रूप दरसाते हैं और मन में न आने की शिक्षा देते हैं। यही सन्तमत है।

नाना कला दिखाय वही मोहता रहा।
सब की कमाई आप खड़ा खोसता रहा ।।

जब तक कोई आदमी मन के चक्कर में है वह आत्मपद को प्राप्त नहीं कर सकता। जब तक कोई आदमी बाबे फकीर का या किसी और गुरु का रूप बनाता रहेगा, उसको आनन्द तो मिलेगा और सिद्धि शक्ति भी आ जायेगी। मगर वह मन के चक्कर से नहीं निकल सकेगा। क्योंकि यह तो सारा मन का ही खेल है :-

गुरु ज्ञान का रुप है गुरु ज्ञान का तत्व।

लेकिन हर एक आदमी इस बात को समझ नहीं सकता धन धान्य और मान प्रातिष्ठा कभी सदा नहीं रहते। यदि आज अमीर है तो कल गरीब भी हो जायेगा यदि आज कोई निर्धन है तो कल को धनी भी हो

जाये गा । यदि आज स्वस्थ्य है तो कल को बीमार भी होगा । यदि बीमार है तो स्वस्थ्य भी हो जायेगा, संसार परिवर्तनशील है :-

क्या क्या कहूं अनर्थ बहुत भीत कर रहा ।
बिन संत सत्गुरु वह सभी को निगल रहा ।

अब तुम सोचो कि जिस आदमी ने मुझे यह कहा कि उसने मुझे रात को चान्द में सत्संग कराते देखा । यदि मैं उसको सच्ची बात नहीं बताता तो वह मुझे धन देगा और मेरे आगे नाक रगड़ेगा और सदा के लिये मेरे जाल में फंस जायेगा । ऐसी घटनायें जब दूसरे गुरुओं की होती हैं तो वे उस आदमी के आगे लौड स्पीकर रख देते हैं ताकि उसकी बात को सुनकर और मुरगे भी फंस जायें । ये गद्दियें सब ऐसे ही बनी है । यह सब मन का खेल है । मैं अमेरिका गया । वहां मेरे पास राष्ट्रपति निकसन का बाडीगार्ड और दो डाक्टर जिनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता था आये और उन्होंने अपना हाल सुनाया मैंने उनसे कहा कि मैं नहीं जाता किसी के अन्तर और न ही तुम्हारे अन्तर आया । उनके अन्तर मेरा रुप क्यों प्रकट होता था ? सुनो । यह विचार की शक्ति है । वहां डाक्टर *J.C. Sharma* जब *University*

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

(विश्वविद्यालय) में या कहीं दूसरी जगह भाषण देता था तो वह कहता था कि दयाल फकीर मेरे सामने खड़ा है और मुझे कहता है कि यह बात कह दो। उन्होंने इस विचार को ले लिया। इसलिए मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता था। यदि परदा रखता तो जितनी इच्छा धन वहां से लाता। मगर मैं केवल ३०० डालर वहाँ से लाया और वह भी किताबें दे कर। दूसरे गुरु वहां जाते हैं और लाखों डालर लाते हैं। आजकल का गुरुवाद पैसावाद है। कोई सचाई वर्णन नहीं करता। मैं आया हूं भोले लोगों के लिए। यह बताना चाहता हूं कि तुमको असलियत का पता नहीं है। तुमको गुरुमत या सन्तमत का पता नहीं है, इसलिए तुम लुटे जा रहे हो। बर्तमान गुरुमत २ नहीं रहा, कालमत बन गया है। यदि मैं झूठ कहता हूं तो कोई महात्मा मुझे बताये कि मैं झूठ कहता हूं।

यहां होशियारपुर में दो आदमी मरे। तीन चार दिन के बाद एक आदमी मेरे पास आया और कहने लगा कि बाबा जी ! जब मेरा बाप सायं काल को मर गया तो मैं रात को उसकी लाश के पास बैठा था। बैठे २ मेरी आंख बन्द हो गई। मैंने देखा कि

आगे आप हैं। आपके पीछे मेरा बाप है और फिर बाबा चरण सिंह जी हैं। आप तीनों आकाश में जा रहे हैं। एक व्यक्ति ने आकर मेरे बाप को पकड़ना चाहा। लेकिन आपने उसको डांट दिया कि यह हमारा जीव है। तुम इसको नहीं ले जा सकते। फिर वह आदमी चला गया। इतने में मेरी आंख खुल गई।

कुछ समय बाद महाराज चरणसिंह जी होशियारपुर में आये। मैंने पत्र भेजा कि मैं आपसे मिलना चाहता हूं। उन्होंने कार भेज दी और मैं उनके पास गया। मैंने कहा कि में हूं हजूर दाता दयाल जी महाराज का शिष्य। मेरे ज़िम्मे यह काम करने की आज्ञा है और मैं हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञा से यह काम करता हूं। अब आप मुझे यह आज्ञा दें कि मैं यह काम करूं या न करूं। उन्होंने कहा कि पण्डित जी ! आप बड़ी खुशी से करो। मैंने कहा तो फिर एक बात का मुझे उत्तर दो। होशियारपुर में दो तीन घटनायें ऐसी हुई हैं कि लोगों के मरने पर उन लोगों ने यह कहा कि बाबा फकीर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

और बाबा चरण सिंह जी हमको लेने आये हैं। मैं तो उनको लेने गया नहीं। क्या आप गये थे ? उन्हों ने कहा कि मैं नहीं गया ? मैंने कहा कि डेड़ लाख संगत पीछे आपके लगी हुई है। आप इनको सच्ची बात क्यों नहीं बताते। उनका सैकट्री राय साहिब मुन्शी राम तुरन्त आया और कहने लगा कि पण्डित जी ! आप सच कह रहे हैं लेकिन सच्ची बात मनसूर ने कही, उसको सूली पर चढ़ाया गया। मैंने कहा कि वह तो अनुलक्क कहता था। मैं अनुलहक्क नहीं कहता। मैंने अपने कोट के बटन खोले और कहा कि लो मुझे गोली मार दो। लेकिन यह याद रखो कि मैं यदि एक फकीर मर गया तो मेरे जैसे हजारों फकीर पैदा होंगे जो इस पाखण्ड के जाल को तोड़ेंगे।

ये सब गुरु मेरे सामने तो मानते हैं कि हम कहीं नहीं जाते और न ही हमको कोई पता होता है। लेकिन पब्लिक में ऐसी बात कभी नहीं बताते। तुम सच्चे बनकर किसी भी गुरु के पास जाओ, उसकी सेवा करो और सच्चा ज्ञान प्राप्त करो। तुम्हारा

बेड़ा पार है। तुम्हारे विश्वास ने तुम्हारा बेड़ा पार करना है, किसी गुरु ने नहीं करना है,। यदि अच्छा विचार रखोगे तो अच्छे दृश्य तुम्हारे सामने आयेंगे और यदि बुरा विचार रखोगे तो दृश्य भी बुरे ही आयेंगे। सन्त कहते हैं कि अच्छाई और बुराई दोनों से निकलो और प्रकाश और शब्द को पकड़ो। मैं यहां आया हूं। क्योंकि मेरा कर्तव्य है, इसलिए, सचाई वर्णन कर रहा हूं। यद्यपि मैं जानता हूं कि मेरे स्पष्ट वर्णन के कारण मुझे कोई धन नहीं देगा। तुम लोग वहां जाकर सिर मुंडवाते हो जहां तुमको धोखा दिया जाता है और सब्ज़ बाग दिखाये जाते हैं।

सांचे कोई न पतीजिए झूठे जग वतयाये।
गली गली गठ, रस फिरे और मदरा बैठ वकाये।

तुम लोग वहां खुश रहते हो जहां तुमको धोखा देकर अपने जाल में फंसाया जाता है।

आगे न कोई जाय इसी में भुला रहा।
माया का झूला डाल मुनिन को झुला रहा॥

माया क्या है? ये जितने रंग रूप, भाव विचार और शक्लें तुम्हारे अन्तर प्रकट होते हैं, यह सब

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

माया है। तुम्हारे अन्तर बाबा फकीर प्रकट होता है। मैं तो होता नहीं। वह तुम्हारी माया है। इस माया से पार जाने के लिए सन्तों की शिक्षा है और वह शिक्षा यह है कि अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो और जब तक माया में हो "शिव संकल्पं अस्तु" के असूल के अनुसार अपने विचार शुद्ध रखो आपिस में प्रेम से रहो और घरों में शान्ति रखो।

द्वारे के पार काहूं को जाने न दे रहा।
फिर भेद वहां के पार का सबही ढका रहा।

दसवां द्वार अध्यात्मिक्ता में जाने का दरवाज़ा है। वहां मन संकल्प नहीं करता मगर तुम लोग तो सारी आयु रूप के पीछे ही लगे रहे। एक गुरु किया वह मर गया फिर दूसरे के पास गये, फिर तीसरे के पास गये। किस भ्रम में पड़े हो। तुम भी सच्चे हो। तुमको कोई सच्ची बात नहीं बताता। सब अपने २ डेरों और गद्दियों के लिए ऊट पटांग बातें बनाकर तुमको फंसाते हैं और धन इकट्ठा करते हैं और सच्ची बात तो यह है कि तुम लोग भी सचाई को सुनने के लिए त्यार नहीं हो। आज तुम बताओ कि क्या तुम लोग सचाई के लिए मेरे पास आये हो,

किसीको कोई कष्ट है, किसी को कोई दुःख है, किसी के लड़का नहीं, किसी को मुकदमे की चिन्ता है और किसी के घर घर में झगड़ा है। जो कुछ किसी को मिलता है वह उसके अपने कर्म का फल मिलता है। इसको कोई रोक नहीं सकता। यदि कर्म के फल को कोई काट सकता है तो तुम्हारा कर्म और विश्वास काट सकता है। लोग अपने विश्वास से मेरे पास से प्रसाद ले जाते हैं और ठीक हो जाते हैं। मेरी स्त्री 6½ साल बिमार रही और मैं कुछ न कर सका। कई महिलायें जिनके 20-20 साल से बच्चा नहीं हुआ था। मेरे पास से प्रसाद ले गईं और उनके लड़के हो गए। लेकिन मेरी लड़की के विवाह को २० साल हो गये। उसके कोई बच्चा नहीं है। मैंने उसको कई बार प्रसाद दिया है। तो आप सोचो कि क्या मैं करता हूं? नहीं! लोगों का अपना विश्वास काम करता है। मैं यहाँ हर साल आता हूं। क्या पैसा इकट्ठा करने के लिए आता हूं? मैं सचाई बताता हूं ताकि तुम भटको नहीं और लुट न जाओ और तुमको शान्ति मिले। दो और देना भी चाहिए मगर निष्काम होकर। लेने को तो मैं भी लेता हूं क्योंकि

रुपये के बिना मन्दिर का काम नहीं चलता। मगर किसीकी आंख में मिट्टी डालकर मैं लेना नहीं चाहता जिसकी इच्छा करे मेरी बात को सुने जिसकी इच्छा चाहे न सुने। मेरी कोई किताब पढ़े या न पढ़े। मेरे सत्संग में आये या न आये। यदि कोई यह समझता है कि मेरी इस शिक्षा से लोगों का भला हो सकता है तो इस शिक्षा को फैलाने के लिए जो इच्छा हो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें।

मन के चक्कर से आगे प्रकाश और शब्द है। सनातन धर्म में इसका नाम पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म है। हमारी आत्मा पारब्रह्म देश से आता है :

क्या शेष क्या महेश सभी हार कर रहा
बिन संत उसके पार कोई भी न जा रहा ॥

अब आप बताओ कि जो महात्मा यह कहते हैं कि हम तुम्हारे अन्तर प्रकट होकर तुम्हारे काम करते हैं और तुमसे धन इकट्ठा करते हैं। क्या वे सन्त हैं ? सन्त वह है जो सत में रहता है और सत है प्रकाश और शब्द। जो आदमी मन के चक्कर में नहीं आता और प्रकाश और शब्द में रहता है, वह सन्त है।

सो भेद राधास्वामी सभी को सुना रहा।
जिस पर है मेहर उनकी वह परतीत ला रहा ।।

यह भेद राधास्वामी दयाल दे रहे हैं। मैं हूं राधास्वामी दयाल और मैं हूं सन्त कबीर। कैसे ? मैं संसार को वह सचाई बता रहा हूं जो वे बता गये। मुझे कोई सुरखाव का पर नहीं लग गया। मैं यह भेद बता रहा हूं कि मैं किसीके अन्तर नहीं जाता और न ही कोई और गुरु किसीके अन्तर जाता है तुम्हारा ही विश्वास तुम्हारे सारे काम करता है? मुझे तो पता भी नहीं होता। हज़ारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं और अपने अपने विश्वास के अनुसार उनको फल मिलता है।

यह तो स्वामी जी महाराज की बाणी आपने सुनी। अब हजूर दाता दयाल जी महाराज का शब्द सुनो। वह लिखते हैं :-

प्रेम छाया से किया, छाया का गुन जाना नहीं।
तूने अपना और उसका, रूप पहचाना नहीं ।।

तुम अपने अन्तर में बाबे फकीर का, राम या किसी और का रूप बनाकर उससे प्रेम करते हो। वह तो तुम्हारे ही मन की छाया है। तुम्हारे ही मन

का संकल्प है। गुरु तो बाहर बैठा हुआ है। अन्तर में जो रूप प्रकट होता है वह बाहिर से तो नहीं आता। वह तो तुम्हारे ही मन का बनाया हुआ है। तुम अपने रूप को भूल गये। तुम बड़े हो या वह रूप वड़ा है, जो तुमने स्वयं बनाया है। किस भ्रम में पड़ा हुआ है संसार। सोचो मेरी बात को। क्योंकि यह मेरा कर्तव्य है। इसलिए सचाई बता रहा हूं। कोई सुनें या न सुनें। इस वास्ते राधास्वामी मत में जीवत गुरु की महिमा है और पूजा है। तुम लोग अपने अन्तर में गुरु की मूर्ति बनाकर उसको फूल चढ़ाते हो। वह तो तुम अपने ही मन की भक्ति करते हो। जितना तुम प्रेम करोगे उतना ही फल मिलेगा। तुम बड़े हो। तुमने ही तो बाबे फकीर या राम की मूर्ति बनाई है। अपना मान करना सीखो। तुम प्रकाश और शब्द स्वरूप हो बल्कि इससे भी परे हो। उस मालिक की अंश हो। क्यों माया में फंस कर दूसरों के आगे नाक रगड़ते हो।

ब्रह्म में माया है शक्ति, शक्ति दुःखदाई कहां।
भरम से बलवान ने, बल पाके बल माना नहीं।

कई आदमी कहते हैं कि बाबा जी! आपको याद किया, आप आये और आपने यह किया, आपने

वह किया, क्या मैं गया ? वे अपने ही बिश्वास से मेरा रूप बना लेते हैं और उससे काम ले लेते हैं। तो फिर शक्ति तुम में है या मुझ में ? एक आदमी दिल्ली से आया, कहने लगा कि बाबा जी ? आपने मेरे मकान की आग बुझाई है। क्या मैं गया था ? नहीं ! तुम्हारा मन शक्तिशाली है और तुम अपना कर्म बनाने वाले आप ही। तुम अपनी कदर करना भूल गये। इसलिए जगह जगह धक्के खा रहे हो। गुरु की यही बड़ाई है कि वह तुम्हारे अज्ञान और भ्रम को दूर कर देता है और तुमको तुम्हारे रूप में ठहरनें की शिक्षा देता है। कबीर साहिब ने कहा है।

बलहारी जाऊं मैं सतगुरु के, मेरा किया भरम सब दूर।
चन्द चढ़या कुल आलम देखे मैं देखूं भरम दूर ॥

तुम्हारे भ्रम दूर करके तुमको तुम्हारे रूप में ठहरा देना यह बाहर के गुरु का कर्तव्य है। तुमको ज्ञान देने के लिए वाहर का गुरु आता है। संसार भ्रम में आ गया। यहां गद्दियों के लिए गुरुओं के झगड़े और यहां यह झगड़ा कि गुरु कौन है। किस भ्रम में पड़े हो ? सचाई यह है जो में बता रहा हूं।

माया छाया एक है, दौड़ों तो दौड़ें और चले।
रुकने से रुकती है, उससे भय कभी खाना नहीं।

तुम्हारी अपनी ही बुद्धि है, अपने ही मन की कल्पना है अच्छी भी और बुरी भी। इसलिए मन को वश करो। मन को वश करने के लिए सुमरिन भजन और ध्यान दिया जाता है। मगर यह लक्ष्यपद नहीं। यह तो मन की चंचलता को दूर करने के लिए है। जो सारी आयु सुमरिन ध्यान और भजन ही करते रहते हैं और सतसंग नहीं करते, वे भी अधूरे हैं। इसलिए सतसंग और अभ्यास दोनों ही आवश्यक हैं :-

जान लो पहचान लो, और अपनी शक्ति मान लो।
जान कर पहचान कर, भ्रान्ति में चित लाना नहीं॥

माई ! तू कहती है कि तेरा सुसर तेरे अन्तर आया। कोई सुसर नहीं आया। यह सब माया का चक्कर है। कोई किसी के अन्तर नहीं आता। जब प्रारम्भ में सन्त कृपाल सिंह जी ने काम करना आरम्भ किया तो यह लोगों को *Messages* देते थे कि गुरु महाराज ने तुम्हारे लिये यह आज्ञा दी है। मुझे भी उन्होंने लिखा कि मेरे अन्तर दाता दयाल जी महाराज आये और उन्होंने कहा कि फकीर से कह दो कि सुमिरन ध्यान किया करें। मैंने उनको लिखा कि मुझे यह लिखने से पहले आपको यह सोचना चाहिए

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

था कि आप किसको पत्र लिख रहे हैं। हजूर दाता दयाल जी मेरे गुरु थे। आपके नहीं थे। यदि उन्होंने मुझे कुछ कहना होता तो आपके द्वारा कहने की बजाय वह मुझे स्वयं कह सकते थे। लेकिन मैं यह जानता हूं कि कोई मरा हुआ गुरु किसी को कुछ कहने के लिए नहीं आता। इसलिए आगे भविष्य में ऐसी कोई बात मुझे मत लिखना। रात को तुम्हारे स्वपन में तुम्हारा लड़का या तुम्हारी स्त्री आ जाती है। प्रात: उनसे पूछो कि क्या वे आये थे? जब वे नहीं आये तो बाबा फकीर, सन्त कृपाल सिंह जी, हजूर बाबा सावन सिंह जी या हजूर दाता दयाल जी महाराज कैसे आये ? यह सब भ्रम और अज्ञान है और इसी अज्ञान के कारण डेरे और गद्दियें बनीं। मैं इसी लिए अवतार लेकर आया हूं कि गुरुमत जिसकी शिक्षा राधास्वामी दयाल और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दी है सच्चा है।

राधास्वामी संग कर, कुछ दिन कि तुमको ज्ञान हो।
ज्ञान पाकर भूल के, चक्कर में फिर आना नहीं॥

किसी के चक्कर में न आना ? मन के चक्कर में न आना। अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को पकड़ो,

यही सनातन धर्म और यही राधास्वामी मत की शिक्षा है। मगर तुम प्रकाश और शब्द को पकड़ नहीं सकते। क्यों? जिन्होंने छोटी आयु में अपना ब्रह्मचर्य खोया हुआ है उनके अन्तर प्रकाश प्रकट होना महान कठिन है। मैंने १९०५ में नाम लिया और १९१७ तक मेरे अन्तर न प्रकाश हुआ और न शब्द हुआ। क्यों? $13\frac{1}{2}$ साल की आयु में मेरा विवाह हुआ और पंदरह साल की आयु में मैं गृहस्थ में फंसा। तो जिन लोगों का विषय विकार का जीवन है उनके लिए प्रकाश और शब्द कठिन है।

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम।
रवी रजनी दोऊं न मिलें एक ठौर इक याम ।।

इसलिए मैंने शिक्षा को बदल दिया कि "मनुष्य बनो" और अपने बाल बच्चों के चरित्र का ध्यान रखो ताकि ये पथभ्रष्ट न हो जायें अन्यथा उनको साधु या डाक्टर लूटेंगे। जब तुम्हारी आयु पचास या पचपन साल की हो जाये और तुम्हारे संतान भी हो तो फिर अपने आपको वश में रखो। जो आदमी शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य नहीं रखता, वह प्रेमी अवश्य हो जायेगा। वह भक्त अवश्य कहला जायेगा,

मगर न उसके अन्तर प्रकाश होगा और न शब्द होगा। इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन करो और अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी को तंग मत करो। यदि एक नौजवान लड़का कमाता नहीं तो घर में अशान्ति हो जायेगी। यदि बूढ़ा बाप रोटी कपड़ा और अपने इलाज के अतिरिक्त अपनी मौज उड़ाने और दान पुन्य करने के लिए अपनी संतान से कुछ चाहता है तो इससे घर में अशान्ति आ जायेगी। आजकल हर एक घर में इसी वास्ते अशान्ति है कि लोग अपने कर्तव्य को भूल गये। ४०-४० साल हो गये लोगों को नाम लिए हुये मगर मिला कुछ नहीं। क्यों? सुनो! तुम्हारे अन्तर तुम्हारा वीर्य ईश्वर का स्थूल रूप है। तुम्हारा मन ईश्वर का सूक्षम रूप है और तुम्हारे अन्तर ज्योति या प्रकाश ईश्वर का कारण रुप है। तुम वीर्य को नष्ट करते हो, मन को वश नहीं करते, वह ऊट पटांग सोचता है और प्रकाश को प्रकट नहीं करते तो फिर तुम को ईश्वर से मिलेगा क्या? इसलिए अपने बच्चों को नाम बेशक न दलवाओ मगर उनके चरित्र बनाओ। इसलिए आजकल के जो लडके और लड़कियां है उनको

किसीको कोई बीमारी और किसी को कोई बीमारी है। यह सब गलत कारियों का परिणाम है।

सन्तों की वाणियों का हवाला दे रहा हूं कि यह सब माया का खेल है। तुम्हारे अन्तर किसी का रूप प्रकट हो गया और तुम वाह वाह करने लग गये। एक बार श्री लाजपत राय सहारनपुर से मेरे पास आया। मैंने पूछा क्यों आये हो ? वह कहने लगा बाबा जी ! आपने हो तो आज प्रातः मुझे बुलाया और अब आप कह रहे हैं कि क्यों आये हो ? दोस्तो ! यह सब मन का चक्कर है। इस चक्कर में आकर तुम लुट गये। मैं तो गया नहीं। हजूर दाता दयाल जी महाराज का मेरे अन्तर १९०५ में एक दृश्य ही तो आया था और अब तक भी उनका रूप मेरे अन्तर प्रकट होता रहा और अब तक भी होता है। लेकिन उन्होंने मुझे यह कभी नहीं कहा कि फकीर ! मैं तेरे अन्तर नहीं जाता लेकिन किताबों में बहुत कुछ लिख गये। अन्तिम सत्संग में उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है लेकिन मैंने किसी के अन्तर नहीं जाता।

स्पष्ट वर्णन सेडेरे नहीं बनते । मैंने इस प
दिया । कोई मेरे सत्संग में आये या न आ

मैं देश की दशा को देखकर चकित ह.. हूं । इनको समझाने वाला कोई नहीं । मैं तो कहूंगा कि इन झगड़ों में मत आओ और अपना काम करो । संसार का चक्कर तो चलता ही रहेगा । आप लोग मेरे पास आते हैं । मेरा भी कोई कर्तव्य है ।

भार पड़े यह देश विराना भवसागर ओगाहा ।
भक्त अभक्त सबन को बोरे कोई न पावे थाहा ।।

यही कबीर साहिब कहते हैं कि इस बेगाने देश को आग लगे, क्यों आग लगे ? क्योंकि यह भवसागर है । ये मन के बिचार हैं । मन इतना बलवान है कि यह भक्त और अभक्त दोनों को डुबो देता है । कैसे? भक्त कोई न कोई रूप बनायेगा । इसलिए वह पार न जा सकेगा । वह इस भव सागर में डूब गया और अभक्त बुरी बातें सोचेगा । इसलिए वह भी डूब गया । दोनों ही डूब गये । पार वह जायेगा जो मन से परे जाकर प्रकाश और शब्द को पकड़ेगा और यही बात हजूर महाराज जी ने अपनी प्रेम वाणी में लिखी है कि अन्त समय में फिलम चलती है । गुरु

भी आ जाता है। वह गुरु नहीं आता तुम्हारे मन का विश्वास आता है। फिर कुछ समय ऊपर के लोगों में रहना पड़ता है। वहां गुरु के दर्शन और सत्संग भी मिलता रहेगा। लेकिन वह भी तुम्हारा विश्वास ही होता है। फिर जब कोई सन्त सत्गुरु इस संसार में आता है तो वह जीव जन्म लेकर उस सन्त सत्गुरु के सम्पर्क में आता है और बाकी की कमाई पूरी करके अपने आदघर को चला जाता है। इसलिए जो आदमी मेरे सत्संग को ध्यान से सुनते हैं और उस पर अमल करते हैं। उनको दूसरा चोला नहीं मिलेगा, नहीं मिलेगा और नहीं मिलेगा। क्यों? क्योंकि मैंने सचाई बता दी है कि अन्त समय जो कुछ भी तुम्हारे सामने आयेगा तुम उसको सत नहीं मानोंगे और उसको माया समझोगे। इसलिए प्रकाश और शब्द में चले जाओ। इसलिए तुम्हारे दूसरे चोले का प्रशन ही पैदा नहीं होता। मगर यह उनके लिए है जो पार जाना चाहते हैं। साधारण लोग तो संसारी वस्तुओं के लिए मेरे पास आते हैं पार जाने के लिए कौन आता है। ये सासा-

रिक वस्तुयें तो तुमको तुम्हारे कर्मानुसार मिलेंगी। कोई गुरु अपने पास से कुछ नहीं देता।

भक्षक आप लीला विस्तारा कला आनन्द दिखावे।
भक्षक को रक्षक कर जाने रक्षक चीन न पावे॥

मन ही रक्षक है और मन ही भक्षक है। कभी इसमें आन्नद है, कभो खुशी है और कभी गमी है। यह आदमी जो मुझे कहता है कि आप बड़े भारी चान्द में बैठे हुये सत्संग करा रहे थें। यह मेरे उस रूप को रक्षक समझता है। वह तो भक्षक की लीला है। यह उसको पथ प्रदर्शक समझता है और वह तो यह बाहर बैठा हुआ है जिस के तुम बचन सुन रहे हो। ऐसी बातों से और ऐसी घटनाओं की गलतसमझ के कारण यह डेरे बने। किसी के अन्तर कोई रूप प्रकट हुआ और किसी के अन्तर कोई। उस रूप को ही सब कुछ मानकर संसार लुट गया।

भजे जाहे सो भशक रक्षक रहा निनाहार।
भरम चक्र में पड़े जीव सब लखे न शब्द हमार॥

तुम बावे फकीर को भजते हो। उसका रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट हो गया। वह तो तुम्हारे ही मन का बनाया हुआ रूप है, वह तो भक्षक है।

उसकी बाणी रक्षक है और बाणी से तुम्हारी रक्षा होगी। मेरे रूप से तुमको आनन्द मिलेगा, रिद्धि सिद्धि भी आ जायेगी, काम भी होते रहेंगे मगर चक्कर से बाहर नहीं जा सकोगे। जो कुछ मैं कहता हूं, क्या कोई सन्त कहता है ? मगर मेरा कर्तव्य है। मैंने जो कुछ कहा उसका मैंने प्रमाण दे दिया। अब मैं अमली पहलू से कुछ बताना चाहता हूं। यह मन बहुत चंचल है, ठहरता नहीं। कई बार यह मुझे भी गिरा देता है। यदि जाग्रत में नहीं तो स्वपन में ही सही। स्वपन में मूझे पता नहीं होता कि यह स्वप्न है तो फिर इसका इलाज क्या है ? पहले सत्संग करो मगर सत्संग उसका करो जो धोखेबाज नहीं। जो यह कहता है कि में तुम्हारे अन्तर गया। उसके सत्संग से तुम्हारा मन पवित्र नहीं होगा। तुम देखो। पोलीस वाले अपने कुत्ते को चोर के कपड़े सुंघा देते हैं और फिर वह कुत्ता उस चोर को तलाश कर लेता है तो इससे सिद्ध हुआ कि हर एक आदमी के अन्तर से उसको *Radiation* निकलती है तो जो महात्मा तुमको यह कहता है कि हां। मैं तुम्हारे

अन्तर गया था या कहता है कि अमुक आदमी की रुह को ले गया था। क्योंकि उसके मन में सचाई नहीं। इसलिए उसकी संगत से तुम्हारा मन साफ नहीं होगा। इस वास्ते किसी सच्चे आदमी की संगत करो।

गुरु खोजी री जग में दुर्लभ रत्न यही।

तुम गुरु उसको मानते हो जिसके दस बारह हजार चेले हों और जिसके पास कारें हों। एक बार बाबा जगत सिंह जी मेरे पास कारखाना में आये। वह मुझसे बहुत प्यार करते थे मैं कारखाने में चक्की पर काम करता था। मेरे हाथों में आटा लगा रहता था। कपड़ों पर आटा पढ़ा हुआ होता था। जब सरदार बहादुर बाबा जगत सिंह जी मेरे पास कार में आये। और भी कारें साथ में थीं। मैंने उनको प्रेम से छाती से लगाया उनके साथ वालों ने मुझसे घृणा की। मैंने उससे कहा कि क्या तुम उसको सन्त समझते हो जिसके साथ बन्दूक वाले हों ? एक चमार भी सन्त हो सकता है, एक दुकानदार भी सन्त हो सकता है और एक निर्धन भी सन्त हो सकता है। सन्तगति तो मन की एक अवस्था है। हजूर महाराज

राय सालिग राम साहिब जी महाराज आगरा में जा रहे थे। हजूर महाराज जी ने थोड़ी दूर एक माशकी को देखा और दो आदमियों से कहा कि जाओ उस माशकी से कहो कि वह तुमको पानी पिला दे। वे गये और माशकी से पानी पिलाने को कहा। माशकी ने उनसे कहा कि क्या तुमको उस मशटन्डे (हजूर महाराज की ओर संकेत करके) ने भेजा है। जी हां। माशकी कहने लगा कि क्या उसके पास पानी नहीं है? जाओ दौड़ जाओ! इसलिए सन्तपना तो एक अवस्था है। मैं भी अभी तक शत प्रतिशत सन्त नहीं बन सका। कभी २ गिर जाता हूं। सन्त बनना महान कठिन है। यदि ऐसी संगत न मिलती तो जिस गुरु से नाम लिया हुआ है उसको होशियारपुर का रहने वाला या व्यास के डेरे का मालिक मत समझो। उसको पूर्ण मानो और शब्दस्वरूपी मानो। उसके काम मत देखो। फिर यदि तुम्हारा शब्द या प्रकाश नहीं भी खुला है तो कोई बात नहीं। क्योंकि तुमने उसको पूर्ण माना हुआ है तो जब वह रुप तुम्हारे सामने आयेगा उससे तुम्हारा काम बन जायेगा। मैं यह नहीं कहता कि मुझको गुरु मानो। नहीं! जहां

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

से तुमने नाम लिया हुआ है उसको मरा हुआ मत समझो। इसलिए शास्त्र कहते हैं :—

गुरु ब्रह्म गुरू विष्णु गुरु देव महेशरह।
गुरु साक्षात परम ब्रह्म तस्मै श्री गुरे नमः ।।

लड़का जब भी मां को देखेगा। उसके मां, के लिए और भाव होंगे। उस स्त्री का पति जब उसको देखेगा तो उसके और भाव होंगे। उस स्त्री के भाई के उसके लिए और भाव होंगे। इन सबको अपने अपने भाव का फल मिलता है इसलिए जिन्होंने सन्त कृपाल सिंह जी से नाम लिया हुआ है और उनके अन्तर उनका रूप प्रकट होता है तो आप उसीको रखो और झटका मत खाओ। संगत या सत्संग के लिए जहां इच्छा हो जाओ। मैंने किसी को नाम नहीं दिया मगर गुरु का काम कर चला। कबीर साहिब ने कहा है :—

गुरु को मानुष जानलो सो नर कहिये अन्ध।
दुखी होयें संसार में आगे जम का फंद ।।
गुरु किया है देह को सतगुरु चिन्हा नाहीं।
कहैं कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहीं ।।

गुरु इष्ट है और आईडीयल है। मैं आपको गुरु का रूप अपने गुरू महाराज जी द्वारा सुनाता हूं। मैं

चाहता हूं कि यह सत्संग साधारण लोगों में मुफत बांटा जाये ताकि लोगों को गुरु की सच्ची समझ आ जाये ।मैं किसी को यह तो नहीं कहता कि तुम अपने गुरु को छोड़ दो । मैं तो सचाई बता रहा हूं कि तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारी ही श्रद्धा और और विश्वास का फल मिलता है :—

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में बड़े अज्ञानी ।।
गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करै व्यौहार ।
सो प्रानी अति मूढ़ है, कैसे जावें भव पार ।।
देह के बने अभिमानी ।। भरम में,
गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले ।
सो तो पशु समान है, संशय में अटके ।।
गुरु बल न जानी ।। भरम में०
गुरु को मानूष जानकर, मानुष करो विचार ।
सो नर मूढ़ गंवार हैं. भूल रहे संसार ।।
मोह के फांस फंसानी ।। भरम में०
गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल ।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल ।।
बड़े योनि की खानी ।। भरम में०
गुरु नाम आदर्श का. गुरु है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को ना लखे, समझो उसे कनिस्ट ।।
बात बूझे मत मानी ।। भरम में०
गुर भाव घट में रहे, अघट सुघट की खाना ।

जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान ॥
नहीं गुरु रूप पिछानी ॥ भरम में०
चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास ।
अपने में दोनों लखें, वही गुरु का दास ॥
रहे गुरुपद घर ठानी ॥ भरम में०
सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।
शब्द गुरू की परख विनु, डूबे भरम के कूप ॥
नर जन्म गंवानी ॥ भरम में०
गुरु ज्ञान का तल है, गुरू ज्ञान का सार ।
गुरूमत गुरु गम लखे, फिर नहीं भव भय भार ॥
कमल जैसी गीत आनी, भरम में०
राधास्वामी सतगुरू सन्त ने, कही बात समझाय ।
जो नहीं माने बचन को, उरझ उरझ उरझाय ॥
कौन समझे यह बाणी ॥ भरम में०

ऐ भाई ? तू कहतो है कि तेरा सुसर तेरे अन्तर आया मैं कहता हूं कि कोई नहीं आया । वह तेरा अपना ही मन था । अच्छा यदि तू समझती है कि तेरा सुसर आया और तू चाहती है कि मैं अशीर्वाद दूं तो मैं कहता हूं कि ऐ प्राणी ! यदि तेरी आत्मा यहां कहीं है और तुमको मुक्ति नहीं मिली तो मैं तुमको कहता हूं कि तू अपने घर प्रकाश और शब्द में चला जा ।

सब को राधास्वामी ।

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर।

दिनांक 7 दिसम्बर 1975

राधास्वामी ! दोस्तो ! भारतवासियो !! मैं बचपन से ईश्वर या परमात्मा को मिलने निकला था। इस खोज के क्रम में मौज मुझको हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उन्होंने मुझे सन्तमत या राधास्वामी मत दिया। मुझे यह जनून था कि ईश्वर या मालिक का रूप क्या है और वह कहां रहता है। इसका पता मुझे आयु खोने के बाद आप लोगों से मिला। जिस शक्तिने यह संसार बनाया है, वह क्या है ? मेरा अनुभव है और अनुभम से उसको देखता हूं। जब अपने विचार और आपने विश्वास से लोग मेरा रूप बनाकर उससे अपने परचे हल करवा लेते हैं, बच्चे ले लेते हैं और नाना प्रकार

के अपने काम करवा लेते हैं और मैं नहीं होता और न हो मुझे कोई ज्ञान होता है तो मुझे यह विश्वास हो गया कि आदमी के मन में बहुत शान्ति है। लोग राम का, कृष्ण का या किसी देवी देवते का रूप बनाकर उससे काम ले लेते हैं तो अनुभव यह सिद्ध करता है कि इस संसार का बनाने वाला भी कोई आदमी है और उस महान पुरष का शरीर भी होना चाहिए, मन भी होना चाहिए और रुह भी होनी चाहिए। क्योंकि जब तक मन और रूह नहीं है, वह संकल्प नहीं कर सकता सबसे पहले आदमी को किसने बनाया ? शास्त्र कहते हैं कि उसने (उस महान पुरुष ने) यह सृष्टि बनाई मगर उसको तसल्ली न हुई फिर उसने अपने संकल्प से मन, या आदमी बनाया और उस आदमी ने अपने संकल्प से स्त्री बनाई। पिछले जमाने में मैथुन नहीं करते थे बल्कि विचार से बच्चा पैदा किया जाता था। मैं इस बात को मानता हूं। क्यों ? क्योंकि जब लोग मेरा रूप बनाकर उससे काम ले लेते हैं तो यह सम्भव है कि उस कर्तापुरुख ने भी अपने संकल्प से आदमी बनाया

और उस आदमी ने अपने विचार से स्त्री बनाई। जब तक तो मन में शक्ति थी तब तक तो मैथुन सृष्टि थी और फिर जब मन निर्बल हो गया तो फिर भोग का सिलसिला आरम्भ हो गया। अब भी कई जगह मैथुन सृष्टि है। अब भी मोर और मोरनी आपिस में मिलते नहीं हैं। मोर जब मस्त होकर नाचता है तो उसकी आंख से पानी के बूंद आंसूओं की शक्ल में गिरते हैं और मोरनी उसे पी जाती है। उससे वह अण्डे देने लग जाती है। इस समय भी अमरीका में कई ऐसे केस (*Case*) हुये हैं जहाँ लड़कियों ने ये बताया है कि उन्होंने किसी पुरष का संग नहीं किया लेकिन उनके बच्चे पैदा हुये। हज़रत ईसा-मसीह का जन्म भी कंवारी लड़की से हुआ था, हिन्दुओं में हनुमान का जन्म भी ऐसे ही बताया जाता है।

इस सृष्टि के पैदा करनें वाले का शरीर विराट है, मन अव्याकृत है और रूह हिरण्य गर्भ है। सृष्टि के पैदा करने वाले को कोई कर्ता पुरष कहता है, कोई कुछ कहता है और शास्त्र उसको सोहंग पुरष

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कहते हैं। आप इसको अपने मन का सोहंग पुरष समझ लो या संसार का सोंहग समझ लो। अब यहां क्या हो रहा है ? एक जानवर दूसरे को खा रहा है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा रहो है। दवाईयाँ छिड़क *Spray* करके लाखों और करोड़ों जीव जन्तु मार दिये जाते हैं। चूहों को दवाई डालकर उनको मारा जाता है। तो मैं सोचता हूं यह संसार क्या है, तो फिर मैं उस ईश्वर को क्या पूजूं, जिसके पास सवाय ज़ुलम के और कुछ नहीं है। संसार में लड़ाईयें हो रही हैं। बंगला देश में क्या हो रहा है। हम रोते भी हैं बचना भी चाहते और फिर उसी कर्ता पुरुष के गुलाम बनें हुये हैं और उसी को मत्था टेकते हैं। जिस आदमी को इस संसार की दशा देखकर और दु:खों से तंग आकर वैराग्य हो जाता है, वह इस संसार से निकलना चाहता है और वहां पहुंचना चाहता है, जहां न दु:ख है और न सुख है। तुम लाख ईश्वर और परमात्मा को पूजो, तुम दुख और सुख से बच नहीं सकते। भक्तों के साथ क्या बीती और सन्तो के साथ क्या बीती ?

मालिक की तलाश करने निकला था। जो मालिक मैंने समझा है पता नहीं वह गलत है या ठीक है। मगर मैं सत्यप्रिय व्यक्ति हूं और मेरी नीयत बिलकुल साफ है। सोचता हूं कि मैंने क्या कुकर्म किया जो मैं इस संसार में आया। सन्तमत की शिक्षा के वे लोग अधिकारी हैं जिनको इस संसार में वैराग्य हो चुका है। मैं उस मालिक को तलाश करता हूं जहां जाके सुख और शान्ति से रहूं। कर्ता पुरुष क्या है और उसको किसने बनाया ? कर्तापुरष प्रकाश है, नूर है या रौशनी है। यह हमारे अन्तर में भी है और हमारे बाहर ब्रह्मण्ड में भी इसका केन्द्र है। आप एक दिये को जलाओ। जब दिया जगता है तो लाट के ऊपर का भाग काला होता हैं, बीच में लाल होता है और नीचे का भाग सफेद होता है, दीवे के ऊपर का भाग लाल होता है। दीवे के ऊपर का जो भाग काला होता है। वह धुआँ होता है।ऐसे हो प्रकाश के ऊपर के भाग से जो धुआं निकलता है उसका *Gross Matter* अर्थात स्थूल पदार्थ बन जाता है और जब उस प्रकाश की किरण स्थूल पर्दाथ में आती है तो मन चित बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं। जब तक कोई आदमो उस कर्तापुरष की

पकड़ से बाहर नहीं जायेगा वह दुःख सुख और जन्म मरन से बाहर नहीं जा सकता। आकाश तत्व से अग्नि तत्व बनता है, अग्नि से वायु, वायु से पानी और पानी से मिट्टी बन जाती है। जिस प्रकार आकाश तत्व सूक्ष्म होता हुआ स्थूल बन जाता है ऐसे ही सोंहग पुरष के केन्द्र से जो *Radiation* निकलती है वही *Radiation* स्थूल बनकर पृथ्वी बन जाती है। जिस प्रकार हमारे अन्तर लाखों और करोड़ों कीटाणु पैदा हो जाते हैं ऐसे ही जीव जन्तु इस ब्रह्मण्ड में पैदा हो जाते हैं। जिस प्रकार हमारे अन्तर एक कीटाणु की हैसियत है। ऐसे ही इस ब्रह्मण्ड में आदमी की हैसियत है। इस रचना के करने वाले को सन्तों ने सोंहग पुरष या काल कहा है। उस कर्ता-पुरष ने हमको अपने जैसा बनाया और जो गुण उसमें हैं वही हम में आये। हम लोग भी अपनी खुशी के लिए बच्चे पैदा करते हैं। लेकिन हमने यह कभी नहीं सोचा कि आगे चलकर इन बेचारों के साथ क्या बीतेगी। क्या इनको *T.B.* होगी या इनको कैंसर होगा। इसलिए सन्तों के मार्ग में या मेरे मार्ग

में इस संसार को पैदा करने वाला दोषी और निर्दय है। लोग मुझे बेशक काफर कहें। कह दें। मगर जो कुछ मैं कह रहा हूं यह सच्चाई है।

जैसे सोडा और सत निम्बू को मिलाने से शूं शूं होने लग जाती है या दो चीज़ों के मिलाने से तीसरी चीज़ पैदा हो जाती है ऐसे ही *Negative* और *Positive* के मिलने से हमारे मन चित बुद्ध अहंकार पैदा हो जाते हैं, हमारा जीवन बना, मगर वह अधूरा था। कैसे ? जैसे एक आदमी बीमार है। उसकी नबज़ चलती है, दिल की गति हो रही है, सांस भी आता है। वह जीवित है मगर बोल नहीं सकता और वह बेहोश है। उस सोंहग पुरष ने जब यह देखा कि उसकी रचना अधूरी है तो उसने सर्वाधार की अंश अर्थात सुरत को प्राप्त किया। वह सुरत या वह शक्ति वहां से आयी जहां से वह सोहंग पुरष बना। स्वामी जी महाराज अपनी बाणी में सुरत संवाद में लिखते हैं :—

अब सूरत पूछे स्वामी से। भेद कहो अपना तुम मो से।
वास तुम्हारा कौन लोक में। हां आये तुम कोन मौज में॥

सतपुरष समय का सतगुरु कहा जाता है। वह

वहां से मानव चोले में आता है। जहां काल की रचना नहीं है।

देश तुम्हारा कौन लोक में। खोजे सुरत न पावे नूर ॥

मैं खोजी था। मालिक को मिलना चाहता था। मुझे पता नहीं लगता था। इसलिए तड़पता था।

मैं बिछड़ी तुम से कहो कैसे। देश पराये आई जैसे ॥

यह देश हमारा नहीं हैं। यहां कोई दस साल के लिए, कोई बीस साल के लिए, कोई पचास साल और कोई सौ साल के लिए आया। कहां गये बड़े २ बुद्धिमान विज्ञानी, राजे महाराजे और सन्त? हम यहां आये हैं। हमारे ऊपर काल का इतना भारी चक्कर है कि हम समझते भी हैं कि हमने यहां से एक दिन चले जाना है। लेकिन फिर भी हमको होश नहीं आती और बजाय यहां से निकलने के दिन प्रति दिन और फंसते जा रहें हैं।

मेरा हाल भिन्न कर गाओ। देश आपना मोहि लखाओ ॥

यह सुरत पुछती है कि मैं कौन हूं और कहां से आई हूं।

तब हंस शब्द सुवाणी बोले। सुनो सुरत तुम मैं कहुं खोले।
जो तू पूछे भेद हमारा। कहूं सभी अब कर विस्तारा ॥

मैं हूं अगम अनाम अमाया। रहूं मौज में अधर समाया ।।
मैं कहा करता हूं कि मैं अनामी धाम से आया हूं।

सन्त दो प्रकार के होते हैं। एक स्वत: सन्त होते हैं जैसे कबीर साहिब और राधास्वामी दयाल और एक यहाँ आकर सन्त बनते हैं । मैं स्वत: सन्त नहीं हूं। यहां आकर सन्त बनने का यत्न कर रहा हूं। यद्यपि अभी तक शत प्रतिशत बन नहीं सका। सन्त भेद देते हैं कि तेरी जात क्या है और कहां है। उस जात में ब्रह्म विष्णु और महेश या देवी देवते नहीं है। वह हमारा घर है और वह बहुत दूर है। कबीर साहिब कहते हैं :—

दूर गवन तेरो हंसा हो, घर अगम अपार ।।
नहिं वंह काया नहिं वंह माया, नहिं वंह त्रिगुन पसार ।।
चार बरन उहवां हैं नहीं, ना है कुल सयोहार ।।
नौ छः चौदह बिघा नाहां, नहिं, वह बेद विचार ।।
जप तप संजम तीरथ नाहीं, नाहीं नेम अचार ।।
पांच तत्त नाहिं उत्पत्ति भइलै, सो परलय के पार।
तीन देव ना तेंतिस कोटी, नाहिं दसो अवतार ।।
सोलह संख के आगे होई. समरथ कर दरवार।
सेल सिंघासन आसन बैठे, जहां सवद झनकार ।।

वह है हमारा आदघर। मैं मालिक को मिलने निकला था। क्योंकि मैंने सन्तों की बाणी पढ़ी जो

कि सनातन धर्म के साथ मेल नहीं खाती थी (या नहीं मिलती थी) और मेरे विचार सनातनधर्म के थे। इसलिए मैंने प्रण कर किया था कि इस मांग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इसलिए में यह अपना कर्म भोगता हूं, किसी पर कोई उपकार नहीं करता, हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। उनकी आज्ञा के पालन में मैंने जो स्वयं अनुभव किया वह कहता रहता हूं।

मेरा भेद न कोई पावें। में ही कहूं तो कहन में आवे।

उस अवस्था को वह वर्णन कर सकता है जो वहां जा सकता है और वहां रह सकता है। वहां कौन जा सकता है ?

पिण्ड अण्ड ब्रह्मण्ड से पारा, वह है देश हमारा।

जो पिण्ड अण्ड और ब्रह्मण्ड से परे अर्थात मन और आत्मा से परे जा सकता है वह उसके बारे कुछ बता सकता है।

पिरथम आगम रूप में धारा, पुसर अलख पुरुष हुआ न्यारा
तीसर सन्त पुरुष में भया, सन्तलोक में ही रच लोया॥

यह है हस्ती। हैवना ! इसमें जाग्रत स्वप्न और

सुषुप्ति होती है। यही तीन अवस्थायें जाग्रत स्वपन और सुषुप्ति हमारे शरीर की हैं ऐसे ही मन की और प्रकाश की अवस्थायें होती हैं। इन अवस्थाओं को केवल साधक जान सकता है। दूसरा नहीं। यूं तुम देखो यह त्रिलोकी है, उंगली के तीन भाग, बाजू के तीन भाग, टांग के तीन भाग सिर, धड़ और टांगें हैं। हर जगह *Trinity* है और हर एक *Trinity* का चौथा पद अर्थात उसका आधार होता है। जिसके सहारे वह तीनों खड़े होते हैं। हर एक स्टेज पर शरीर, मन और रुह की तीन अवस्थायें होती हैं। जिसको यहाँ दुःख और कष्ट आते हैं वह इस मार्ग पर आता है :-

जग जाग्रत भी दुख मूल। सुपना भी दुख सुख सूल ॥
सुषपति कुछ घर आराम। वह भी नहिं ठहरन धाम।
तीनों में भरमत आठों जाम ॥ पूरा नहीं कहीं निसराम ॥
अब करिये कौन उपाय। का से अब पूछूं जाय ॥
तड़पू और तरसूं निस दिन।विरह अग्नि जलूं में दिन दिन।

हमारे अन्तर कोई तलाश है। हमको किसी वस्तु की इच्छा है। हमको पता नहीं लेकिन हम खिचे जा रहे हैं।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

कोई राह न सुख की गावे। सब करम भरम भरमावे॥
कोई तीरथ बरत बतावे। कोई जप तप माहिं लगावे॥
निज भेद कहे नहिं कोई। बिरथा नर देही खोई॥
यह सोज करा मैं भारी। तब सतगुरु आन सम्हारी॥

जब कोई समग्र का सन्त सतगुरु इस संसार में आता है तो वह *Demand & Supply* के नियम के अनुसार आता है और वह केवल अधिकारी जीवों के लिए आता है। साधारण जीवों के लिए नहीं आता।

कर दया भेद बतलाया। तुरिया पद मारग भारा गाया॥

जब आदमी शरीर को भूल जाता है तो उस अवस्था का नाम मन की जाग्रत अवस्था अर्थात तुरिया पद है।

तुरिया से आगे बरना। फिर उससे आगे चलना॥
तिस के भी परे लखाया। उस के भी पार सुनाया॥
तिस परे और समझाया। कुछ आगे और बुझाया॥
ठहां से पुनि आगे भाखा। निज धाम मुख्य यह राखा॥

कुल नौ दरजे हैं, तीन शरीर के, तीन मन के और तीन आत्मा के। जब तक कोई आदमी अपनी जाग्रत और स्वपन अवस्था को नहीं भूलेगा, अपने मन और आत्मा को नहीं भूलेगा वह सतलोक और अलख लोक में नहीं जा सकता। मैं स्वयं भी नहीं

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

ज़ा सकता था। मैंने दस २ घण्टे अभ्यास किया। मगर असलियत की समझ नहीं आती थी। अब तुम लोगों की दया से मुझे भेद समझ में आ गया। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनके काम कर जाता है और मुझे पता तक भी नहीं होता तो समझ आ गई कि ये जितने रंग रूप अन्तर में बनते हैं यह सब मन का ही चक्कर है। क्योंकि ये रूप मन से ही बनाये जाते हैं। यह संत ज्ञान मुझे आप लोगों से मिला। इसलिए अब मैं इस आयु में आप लोगों को अपना सच्चा सत्गुरु मानता हूं और अब मैं सत अलख और अगम में रहने का यत्न करता हूं। यह है मेरा जीवन का अनुभव :—

इन तीनों में मेरा रूप। रहां से उतरो कला अनूप॥

हमारी हस्ती की भी तीन अवस्थायें हैं। सत उसकी जाग्रत अवस्था है; अलख उसकी स्वपन अवस्था है और अगम उसकी गहरी नींद की अवस्था है, उस भण्डार में से एक किरण निकली और उस एक किरण का ही यह सारा पसारा है। मैं तो यह कहुंगा कि यहां हज़ारों सोंहग पुरुष हैं, हज़ारों सुत

महांसुन, हजारों त्रिकुटियें, और हज़ारहा ज़मीने हैं। एक बार मेरे एक मित्र ने मुझसे कहा कि आप वह बात कहें जो पुस्तकों के अनुसार हो। "अरे बाबा कहां पुस्तके और कहां सन्त" यह अनुभव है। गुरु नानक साहिब ने भी कहा है कि लाखों पाताल हैं और लाखों आकाश हैं

रहां तक निज कर मुझ को जानो। पूरन रूप मुझे पहिचानो।

वह मालिक फिर क्या है ? मैं उसका अनुभव करता हूं अभी समाधी में उसी मालिक में था । प्रकाश एक मण्डल है और मैं उसको देखता हूं। वह सर्वाधार एक जात है अकाल पुरुष है।परमतल आधार है। उसमें से एक किरअ निकली और उसीका ही यह सारा विस्तारा है।

अंस दोय सतपुरुष निकारी। जोत निरंजन नाम धरा री॥

मैं चाहता हूं कि अनेक जोत निरंजन हैं। स्वामी जी ने तो केवल एक ही कहा है। लेकिन इस रचना का कोई अन्त नहीं मिलता। विज्ञान भी चकित है। विज्ञानिकों ने इस *Milki Path* से आगे उन्होंने एक बहुत बड़ा *Milki Path* खोजा है।

यह दो कला उतर कर आई। झंझरी दीप में आन समाई॥

जब कोई वस्तु गति में आती है तो उसमें से आवाज़ पैदा होती है *Negetive* और *Positive* से जीवन वन जाता है। मन और वस्तु है, रूह और वस्तु है और सुरत और वस्तु है :—

यहां बैठ तिरलोकी रची। पांच तीन की धूम अब मची ॥

वह जो उस शक्ति में से *Current* और *Radati-ation* निकलती है उससे संसार बनता है। जब ऊपर जाता हूं तो उस समय शरीर भी होता है मन भी होता है मगर *Sensution* नहीं होती।

तीन लोक से मैं रहूं न्यारा। चार पांच छः में विस्तारा ॥
तीन लोक इक बुन्द पसारा। सिंध रूप में अगम अपारा ॥

यह त्रिलोक एक बून्द या एक किरण का पसारा है। पता नहीं यहां कितनी रचना है।

मैं न पताल स्वर्ग नहिं गिरता। ब्रह्मा विष्णु महेश न जुगता
नहिं गोलोक नहीं साकेत। इन्द्रपरी नहिं बहन समेत ॥
तीन लोक व्यापक मैं नहीं। बुन्द एक मेरी यहां रही ॥

वह कहते हैं कि मेरी एक बून्द यहां रहती है। अब आप सोचो कि यह सब एक बून्द का पसारा है, पता नहीं उसमें से कितनी किरणे निकलती रहती हैं।

उसी बून्द का सकल पसारा। वेद ताहिं कहे ब्रह्म अपारा ॥

उसी का सारा खेल है। उसने जीव जन्तु बना दिये ओर आज वे बेचारे कष्ट में फंसे हुये हैं। आप लोगों को सुख मिलता होगा लेकिन हमको नहीं। संसार में कितना सुन्ताप हो रहा है। कहीं कुछ हो रहा है, कहीं कुछ हो रहा है।

वेदान्ती याहि ब्रह्म बगानें। सिद्धान्ती याहि शुद्ध पुकारें॥
इसके आगे भेद न पाया। सतगुरु बिन धोखा खाया॥

ये लोग सब मन के चक्कर में हैं। उस मालिक तक कोई नहीं गया। स्वामी जी महाराज लिखते हैं कि फिर सुरत प्रश्न करती है:-

दोहा :- सेवा वस तुम काल को, सौंप दिया जब मोहि।
तो अब कोन भरोस है। फिर भी ऐसा होय॥

जब रचना अधूरी थी तो फिर सर्वाधार से काल सुरत को मांगकर लाया और रचना को पूरा किया वह सुरत हैं हम। हम सर्वाधार की अंश हैं। यहाँ आकर चक्कर में फंस गये और अपने घर वापिस जाना भूल गये। हम यहां दु:ख और सुख उठातें हैं। सुरत कहती है सर्वाधार से कि इस बात का क्या भरोसा हैं कि आप मुझको दोबारा काल को सौंप दें।

तब स्वामी हंस कर यों बोले। कहूं वचन में तुम से खोले।
जान बूझ हम लीला ठानी। मौज हमारी हुई सुन बानी।।

मौज क्या है ? यह प्रकृतिक नियम है कि जहां अनर्जी है वह फैलेगा और वह काम करेगी। रचना करना उसका स्वाभाविक गुण है। यह है मौज।

काल रचा हम समझ बूझ के। बिना काल नहि खौफ जीव के।
कदर धात नहिं बिना काल के। मौज उठी तब आस दयाल के।

यह रचना स्वाभाविक है और इस रचना का कोई अन्त नहीं मिलता। यहाँ दुखी जीवों के लिए सत्गुरु आता है और उनको भेद देता है कि शरीर, मन और प्रकाश से निकालकर शब्द को पकड़ो। किसी चीज को बताने के लिए प्रश्नोत्तर का ढंग बहुत अच्छा होता है और सूक्षं से सूक्षं विषय के भाव को बताने के लिए तू और मैं के शब्द प्रयोग किये जाते हैं। यह बाणी का जाल है। कोई ही माई का लाल इस जाल से निकलता है। सब शब्दों के चक्कर में फंस जाते हैं।

मैं यहां सत्संग का काम क्यो करता हूं ? एक मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा और दूसरे तुम लोगों से मुझे यह समझ और

ज्ञान प्राप्त हुआ है और अब मैं वही ज्ञान और समझ आप लोगों को दे रहा हूं। यदि मैं गुरु पदवी पर न अताा तो मुझे यह भेद न मिलता। किसी ने आज तक यह सचाई नहीं बताई जो मैंने बताई है। सबने परदा रखा। ऋषियों ने इसको छाया पुरुष कहा है। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी। इसलिए मैंने जीवन में जो स्वयं अनुभव किया वह कहता रहता हूं। इस शिक्षा को बदलनें से क्या लाभ है ? इससे यह लाभ है कि यदि लोगों को असलियत की समझ आ जाये तो धर्म, कर्म और ईश्वर भक्ति के कारण लोग झगड़ा न करें और उनको शान्ति मिल जाये। अब सतयुग का दौर आने वाला है और यह सन्तों की शिक्षा उस सतयुग को कड़ी के लिए है। जब तक संसार को यह समझ नहीं आयेगी कि हम सब वहां से आये हैं और यहां आकर मालिक को नहीं समझा और यही अज्ञान हमारे आपसी झगड़ों की जड़ है तब तक हमारी एकता नहीं हो सकती। मेरे जिम्मे क्योंकि कर्तव्य है :-

तेरा रूप है अदभुत अचरज तेरी उतम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही॥

अब मैं सोचता हूं कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने तो मेरी डयूटी लगा दी। क्या मैं कुछ कर सकता हूं ? मेरे पास शुभ भावना है। मेरे पास दुखी लोग आते हैं मैं सच्चे दिल से चाहता हूं कि उनको सुख मिले। मगर लाभ उनको होता है जिनका विश्वास होता है और विश्वास केवल उनका बैठता है जिनको कोई दुख होता है। मास्टर चनन सिंह ज़िला गुरदासपुर से अपनी बीमार स्त्री की लेकर यहां आया। किसी ने मेरा नाम बताया होगा। मैंने प्रसाद कर दिया कि बेटी ! इसको खाया करो तूं स्वस्थय हो जायेगी। वह चला गया। अब उसका पत्र आया है। वह लिखता है कि बाबा जो ! अव मेरी स्त्री स्वस्थय हो गई हैं। अब आप कहोगे कि मैंने उसको ठीक किया। नहीं ! उसके विश्वास ने उसे ठीक किया है। मैंने केवल शुभ भावना दी। उस महिला का विश्वास था। उसको *Radiation* मेरे मास्तिक पर पड़ी और मैंने जोर से कहा कि बेटी ! तू ठीक हो जायेगी। *Law of Radiation* काम करता

है । उस स्त्री के दिल में स्वस्थय होने को प्रबल इच्छा थी, तड़प थी और वह मुझ पर विश्वास करके आई थी । उसकी इच्छा और विश्वास का प्रभाव मेरे मस्तिक पर पड़ा और मेरे मुंह से भी ज़ोर से निकल गया कि तू ठीक हो जायेगी । इस संसार में तुम्हारा मन का संकल्प तुम्हारी इच्छा, तुम्हारा विश्वास और तुम्हारा कर्म काम करता है । जहां तुम्हारा विश्वास बैठ गया । समझो कि तुम्हारा काम बन गया । जैसे मीराँबाई का विश्वास था । उसको विष दे दिया गया और कहा कि यह ठाकरों का प्रसाद है । उसको दासी ने बता भी दिया कि यह विष है लेकिन वह फिर भी उसको अमृत समझ कर पी गई । क्योंकि उसका विश्वास था कि ठाकरों का प्रसाद अमृत होता है । इसलिए उसके विश्वास के कारण उस विष ने उस पर कोई प्रभाव नहीं डाला । विश्वास में बहुत शक्ति है ।

तथा शुभ भावना का प्रभाव होता है ? हां ! जिस अवस्था में या जिस *Stage* पर कोई महापुरुष अभ्यास करता है उस *Stage* की अवस्था उस सन्त के मस्तिष्क पर तारी होती है, तो जब वह महापुरष

आंख खोलता है तो उसकी आंखों से और चेहरे से उस *Stage* का अकस दूसरों पर पड़ता। अधिकारीयों का वृत्ति को बदल देता है। कल एक आदमी ने रूद्राक्ष की माला के बारे बताया कि रूद्र नाम है शिव जी का। शिवजी ने बहुत तप किया। सचाई का मुझे पता नहीं। मगर मैं इसको सच मानता हूं। जब शिवजी ने आंख खोली तो उनकी आंखों से दो आंसु गिरे। उन आंसूओं सें दो पेड़ पैदा हुये। उन पेड़ों का यह रूद्राक्ष है। रूदाक्ष का शाब्दिक है "शिव जी की आंखों के आंसू।" कहते हैं कि जो रूदाक्ष को पहचता है वह जन्म मरन से बच जाता है। बच जाता है या नहीं, यह तो मुझे पता नहीं। मगर इससे विचार बदल जाता है।

आप लोग आये हैं। संसार में रहने के लिए है वेद मार्ग। शिव संकल्पं अस्तु। कभी बुरी बात मत सोचो। सदा यह सोचो कि जो कुछ हो रहा है, अच्छा हो रहा है और जो कुछ होगा वह अच्छा होगा। और जो अपने आदघर वापिस जाना चाहते हैं और फिर वापिस नहीं आना चाहते उनके लिए है शब्दयोग। अपने अन्तर शब्द को पकड़ो। शरीर

और मन से भी शब्द पैदा होते हैं। मगर यह सुरत शब्दयोग है। शरीरयोग और मनयोग नहीं है। ऊंचा जाने के लिए शरीर और मन को भूलना पड़ता है। जिसको यह विश्वास हो जाता है कि यहाँ दुःख ही दुःख है। उसके दिल में इस संसार के चक्कर से निकल जाने की इच्छा पैदा होती है।

मैं मालिक को मिलने निकला था। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे नाम निम्नलिखित शब्द लिखा था वह लिखते हैं कि जिस मालिक को तू मिलना चाहता है वह तो काल चक्कर है।

कालचक्र का सहज हिंजोला, झूला अचरज न्यारा।
सब कोई झुलें झूला चढ़कर, काल झूलावन हारा॥
चन्द्र सूर दोऊ गगन में झूलें, झूलें नौ लख तारे।
जीव जन्तु पृथ्वी में झूलें, नर पशु सकल विचारे॥
राजा झूला रानी झूली, और प्रजा समुदाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर झूलें, झूली सब दुनियाई॥
लक्ष्मी झूली दुर्गा झूली, गायत्री महारानी।
देवा झूले देवी झूले, जल थल अग्नी पानी॥
काल भी झूला अपने झूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे।
वह भी बचा न चक्कर से अपने, झूला झूले सारे॥

काल कैसे झूले से न बच सका? समय आता है जब पृथ्वी पानी में, पानी वायु में, वायु आग में और

आग आकाश में समा जाती है और फिर जिस काल ने यह संसार रचा है उसकी भी समय पर मृत्यु हो जाती है। उसका विराट रूप, अव्याकृत रूप और हिरण्य गर्भ रूप भी समय पर समाप्त हो जाते हैं। हो सकता है कि लोग मुझे काफर कहें। मगर जो कुछ मैं कह रहा हूं, यह बिल्कुल सचाई है। बुल्ले-शाह ने कहा है :-

लोग तैनूं काफर कहन्दे, तू आखो आखो आख।
चढ़ी पेंग तब ऊंचे आये, उतरी नीचे ठहरे।
कभी मिले तो जमघट देखो, बिछड़ के हो गये न्यारे॥
एक दशा में नित जो बरते, कोई नजर न आया।
पीर पैगम्बर कुतब ओलिया, ऋषि मुनि बचन न पाया।
पानी भया भाप की सूरत, धाया गिरि कैलासा।
बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निवासा॥
नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊंचे की आशा।
हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा॥
लकड़ी जल कर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी
माटी माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी॥
विष्टा अन्न अन्न भया विष्टा, सोई सब कोई खावे।
यह प्रपंच है अद्भुत न्यारा, कोई विरला लख पावे॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी तैसी।
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी॥

इसलिए सन्त संसार के पैदा करने वाले कर्ता-पुरुष को नहीं पूजते । क्योंकि कर्तापुरुष की रचना में दुख ही दुख हैं ।

पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी ।
कभी जड़ मिल जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी ।
समझत बने कथन नहीं आवे, मन बाणी अलसानी ॥
कैसे कोई समझावे किसको समझे कोई गुरु ज्ञानी ।
एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा ॥
कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा ।
झूले की है विचित्र कहानीं, कथा वारता न्यारी ॥
नर को हम समझावन आये, सुने न बात हमारी ।
दुख सुख दुख सुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बड़ाया ।
द्वन्द भाव ले जगत रचाना, द्वन्द के फांस फंसाया ॥

द्वन्द है दोपना । तुम बाबे फकीर से प्यार करते हो और रोते हो । जो गुरु को बाबा फकीर समझता है या हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज समझता है, वह दुख उठाता है । क्योंकि उसने गुरु के रूप को नहीं समझा । बावलो । गुरु तुम्हारी अपनी ही जात है और वह हर समय तुम्हारे पास है । यदि मेरे मरने पर कोई रोता है तो उसने मेरी शिक्षा को नहीं समझा । यदि तुम्हारे सामने मुझे कोई गाली दे और तुमको क्रोध न आये तब मैं कहूंगा कि तुमने

मेरी शिक्षा को समझा है :—

मन बुद्धि और चित हंकारा, सो झूले की रसरी।
दो लड़ त्रयलड़ चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकढ़ी।
जकड़े माया के फंदे में रोये और चिल्लाये।
शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन बिधि नहीं पाये॥

मेरी भी यही दशा थी। हजूर दाता दयाल जी महाराज के पास जाता तो रोता। वापिस आता तो रोता। बसरेबगदाद में मैं तम्बूरा बजाता और बहुत रोता। वह क्या था ? वह मेरा द्वन्द था :—

तब दयाल को दाया लागी, सन्त रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुकामी, शलिगराम कहाया॥
नर शरीर में प्रगटा आकार, जीवन बहुत चिताया।
जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया।
सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सनाऊं।
बात जो मेरी मन से मानें, इस झूले से बचाऊं॥

मैं शरण में गया था। उन्होंने मुझे अपनाया। गुरू को केवल मत्थे टेकने से तुम पार नहीं जा सकते गुरु की बात को समझो और उस पर अमल करो। तब पार जा सकोगे। तुम लोग तो संसारी वस्तुओं के लिए सन्तों के पास जाते हो। इसलिए तुम सन्त-मत के अधिकारी नहीं हो :-

खेल खेलाऊं सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊं।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि बिचित्र समझाऊं॥
कर सतसंग विवेक से गुरुका, गुरु दयाल हितकारी।
साधु बनकर साथ ले युक्ति, जा झूले के पारी॥

हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे गुरु बना कर मेरे साथ यह खेल खेला। मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं। बात मेरी समझ में नहीं आती थी। इसलिए उन्होने मुझे यह काम दिया था। मुझे इस युक्ति का पता नहीं लगता था। अब समझ आई कि मैं तो किसी के अन्तर नहीं जाता। यह तो सब मेरे अपने ही मन का झगड़ा था। यह बात समझाने के लिए ही मुझें उन्होंने यह काम दिया था। अब यदि मैं यह कहता हूं कि मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं तो मुझे कोई सुरखाब का पर तो नहीं लग गया।

नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सतसंगत में आया।
तेरा दांव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया॥
अब की चूक मौज न ऐसी, त्याग काल की आशा।
आज का साधन आज ही करले, कल को होगा उदासा।

वह कहते हैं कि काल को छोड़ दो अर्थात काल की भक्ति मत कर। संसार कुछ भी कहे, मगर यह सचाई है कि काल की भक्ति को छोड़कर शब्द की

भक्ति करो :—

बार बार नहीं अवसर प्रानी. काल महा दुखदाई।
जो कोई करे काल की आसा, सो पाछे पछताई॥
राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारन आये।
सीस चरन में उनके झुकाकर, अपना काज बनाये॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना।
मन बच कर्म से भक्ति कमाना, झूले बाहर आना॥

किसकी भक्ति ? राधास्वामी की ? राधास्वामी क्या है ?

राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहचान,सुरत से शब्द की भक्ति करना है राधास्वामी है। आजकल समय बदल गया। गुरु नानक साहिब या और सन्तों के दिन मनाये जाते हैं। लेकिन इनकी जो शिक्षा है उस पर तो कोई अमल नहीं करता और न ही इसके बारे कोई सोचता है। तुम लाख उपाय करो मगर जब तक सन्तों की शिक्षा पर अमल नहीं करोगे तुम सुखी नहीं रह सकते इसलिए सन्तों ने उन जीवों के लिए जो इस संसार के दुख सुख से निकलना चाहते हैं। नाम दान जारी किया। गुरु भक्ति यही है जो तुम इस समय कर रहे हो।

दर्शन करे बचन पुनी सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।
गुणं गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार।
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गई गवाई ॥

नाम भक्ति क्या है ? आपने अन्तर शब्द को पकड़ना। लेकिन हर एक आदमी अपने अन्तर में शब्द को पकड़ नहीं सकता। इसलिए मैं किसी को नाम नहीं देता। सुमरिन ध्यान बता देता हूं। इससे तुम्हारा संसार बन जायेगा। नाम उनके लिए है :–

विषयों से जो होय उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन संतान प्रीत नहीं जाके, जगत पदार्थ चाह न ताके ॥
तन इन्द्री आसक्त न होई, नींद भूख आलस जिन खोई।
विरह बान जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा।

जिसका सुमिरन ध्यात करते हो उसको पूर्ण मानो। हो सकता है कि इससे तुमको सुख मिल जाये।

सब को राधास्वामी।

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं १

प्यारे के. जे. सहाय ! राधास्वामी,

काश तुम कुछ दिनों मेरे पास रहते तो अच्छा होता। शब्दयोग से मन काबू नहीं आयेगा। मन को काबू करने के लिये सुमिरण और ध्यान जरूरी है। शब्दयोग से सिर्फ सुरत को शान्ति मिलती है। मन को ध्यान सुमिरण से ; जिन शक्सों का सुमिरण ध्यान कच्चा होता है और वे शब्द का साधन करते हैं उनका यही हाल होता है जो तुमने लिखा है।

मेरे पास एक मस्ताना या दीवाना बैठा हुआ है उसकी भी यही दशा है। इसलिये ऊंचा चढ़ने की कोशिश मत करो, क्या करूं तुम दूर हो। वाणी मेरे भाव को जाहिर नहीं कर सकती। पहले शुरू में पहले मकाम पर राधास्वामी नाम का सुमिरण मन के भाव से सच्चे होकर करो। जैसे सूये को कंबल में या नमदा में धकेला जाता है। इसे प्रेक्टिस के मन को शान्ति मिलेगी।

अगर गुरु रूप से प्रेम है तो गुर के मस्तक व आंखों में अपने मन की वृती को खो दिया करो। मेरा अनुभव किताबी नहीं है। मेरा ख्याल है कि अगर सुमिरण व ध्यान में मन पूरी तरह गढ़ जाय तो जो अवस्था बाकी उस मन की रह जायेगी वोही महासुन है और वोही निर्विकल्प समाधी है। महा-सुन में होता क्या है ? सहसदल कमल में अनेक वाद, त्रिकुटी में त्रैतवाद कौर सुन्न में द्वैतवाद खुद बखुद ही खतम हो जाते हैं। निचले दर्जे की सहस दल कमल त्रिकुटी आदि में तब साधन करने को जरूरत हो नहीं रहती। इस अवस्था के परिपक्व हो जाने के बाद जब तुम्हारी सुरत फिर साधन सुमिरण का धोड़ेगी वह खुद व वखुद आतमपद में चली जायेगी। इस आतम पद के आगे फिर संत अलख अगम और अनाम है।

मगर बुरा न मानना यह मार्ग सिर्फ उनके लिये हैं जो ज़रज़न जमीन की इच्छा से बरी है। जिनको दुनियाँ की इच्छाऐं हैं वो इस मंजिल तक नहीं जा सकते। मैं इसी वास्ते किसीको नाम नहीं देता। तुम्हारा दर्द भरा खत मिला, कुछ दिनों मेरे साथ

रहो, सच पूछो तो मुझे तुम्हारी शकल भी याद नहीं आ रही। यह राज सीना बसीना का है, आपकी ज़ाती जिन्दगी का कोई पता नहीं। मानसिक व शारीरिक ब्रह्मचर्य रखना जरूरी है। तुम्हारी उमर तुम्हारे बाल बच्चे कितने हैं। पत्नी है या नहीं इसलिये फिल-हाल डेफीनेट राय आपको देने के हक्क में नहीं हूं। जब तक डाक्टर बीमार के सारे हालात को नहीं पूछ लेता उसकी प्रकृतिक था वाकिफ नहीं होता उसकी दवाई लग जाय तो लग जाय नहीं तो फायदा नहीं करती।

मैंने पांच नाम पांच स्थान नाम को किताब लिखी है वह भेज रहा हूं। मेरे पास सच्ची हमदर्दी है सच्चे दिल से चाहता हूं तुमको शांति मिले।

आपका फकीर।

पत्र नं: २

प्यारे भाई ! राधास्वामी ।

पत्र मिला, सुनो ? अशांति के चार कारण होते हैं, नं: १ अगर इन्सान मेच्यूरिटी के पहले किसी वजह से अपना ब्रह्मचर्य मानसिक और शारीरिक रूप से खोता है उसमें अशांति का आना जरूरी है। मेरा अपना यह हाल था। तेरह वर्ष की उमर में शादी हुई, १५ या १६ वर्ष की उमर में गृहस्थ में फंसा अशांत था। मानसिक दु:खी था। एक कुरीद थी जो दाता दयाल के चरणों में ले गई। १९०५ से १९१६ तक यद्यपि नाम लिया हुआ था। प्रेम बहुत था, ध्यान शक्ति बहुत थी मगर शाँति नहीं थी। रोता था प्रेम से भगवान को मिलने के लिये। मेरे दाता सतगुरु ने सहारा दिया, मेरा विश्वास उन पर अटल था। मैं उनको राम का अवतार समझकर मानता था, मगर न तो अंतर के नजारे खुले न प्रकाश खुला न शब्द खुला, बड़ी कोशिश करता था। आर्थिक कठिनाई

के कारण १९१६ में फर्स्ट ग्रेटवार में बसरे बगदाद चला गया। स्त्री पास नहीं थी। साधन और अभ्यास करता था। प्रेम में मस्त रहता था। वहां शब्द और प्रकाश मिला, ऋद्धि सिद्धि आई। उस समय का मेरा फोटो जो देखता है चकित हो जाता है। इसके बाद घर आया फिर गृहस्थ में फंसा, शाँति चली गई। चार पांच साल के बाद उसका कारण पता लगा तब संभाला अब मैं शांत हूं। नं: २ दूसरा कारण अशांति का आर्थिक कठिनाई है। और नं: ३ तीसरा कारण किसी ख्याल किसी आदमी का किसी वजह से खौफ या रौब का होना (४) चौथा अज्ञान। अगर कारण नं: १, २ व ३ आदमी में न हों और यह जज्बा पैदा होता हो जिसका तुमने अपने पत्र में जिकर किया है तो इसका मतलब यह है कि तुम्हारी आत्मा इस देह मैं आने के पूर्व किसी अच्छे वजूद मैं थी, नेक थी। ऐसे जीवों को जब वह दूसरा जनम लेते हैं बचपन से ही इस किस्म के ही ख्याल-लात जज्बात पैदा होते हैं। जैसे गुरु नानक साहब कबीर साहब और स्वामी राम तीर्थ के थे ऐसा जज्बा ऐसी विरह यह कुदरत की दया है। मुबारिक

हैं वह शक्स जिनके अंतर ऐसे जज्वे पैदा होते हैं। आप धन्य हैं।

यह तलाश की आग विरह कहलाती है इसमें शुरू २ में ज़रूर कशमकश होती है। मगर इसका अंजाम बहुत अच्छा निकलता है।

विरह जलंती देखकर सतगुरु आये धाय।
प्रेम बूंद को छिड़क कर पल में दिया बुझाय ॥

इस विरह का इलाज जज्बाय इश्क है। मगर चूंके आप एक ऐसी पोजीशन में है। मैं आपके इस इश्क को जब्त में रखना चाहता हूं ताकि आपका संसार और गृहस्थ का जीवन न बिगड़े। गुरु धारण करने के माने यही होते हैं। जो शिष्य की संसारिक व्यवहारिक व परमार्थिक संभाल करे। आपकी यह विरह अपने अन्तर में रहे, इसका विरह का अक्स बाहर में किसी को नज़र न आवे।

अगर अशांति का कारण नं: १ हो तो सिर्फ अपनी स्त्री की इच्छा पर रहो। अपनी इच्छा मत रखो। बाकी आप *Honest* हैं आपको कोई हिदायत करने की जरूरत नहीं। आदमी की कमाई हक्क हलाल की होनी चाहिये वह है हो। आप हर रोज़

सुबह ५ से ७ के दरमियान मेरे स्वरूप का ध्यान किया करो और अगर मन न लगे तो राधास्वामी नाम का अपने मन के साथसु मिरण किया करो। सुमिरण दोनों भंवो के बीच मन के ख्याल के साथ बगैर जबान हिलाये किया करो। अगर मन न लगे तो नाक की कोंपली पर ध्यान जमाकर वहां एक दो मिनट सुमिरण किया करो। आपकी सुरत खुद ब खुद ऊपर को खींच जाएगा, आँखें बन्द हो जावेगी। इस साधन से आपके मन के अंतर खुशी और मस्ती आयगी। रात को जब सोते हो, ध्यान करते हुये न सोया करो, ध्यान छोड़ दिया फिर नींद में चले जाओ। जो आदमी ध्यान करते हुये सो जाते हैं उनकी आत्मिक उन्नति बहुत ही कम होती है।

सुबह ५ से ७ बजे के दरम्यान जितनी देर तुम खुशी से वैठ सको साधन किया करो। मैं भी उस समय समाधी में होता हूं। टैलियै थी के उसूल के मुताबिक मेरी रेडियेशन आपके पास जरूर जायेगी। जिस प्रकार टेलिविजन या रेडियो पर जो बातें या विचार दृष्य होते हैं वह उन सब जगह पर प्रभाव करते हैं, जहां स्विच आन होता है। वह जाहिर होते हैं।

मैंने चेले नहीं बनाये, मगर चुंके तुम्हारे पिता जो परसों भी यहां आये थे, वो यह चाहते हैं कि आपको सुख शान्ति मिले, इसलिये मैं अपना भाव या ख्याल आपको दूंगा। साथ ही आप अपनी एक फोटो मुझे भेज दें ताकि मैं आपका ध्यान करके अगर कुछ आपकी मदद कर सकूं तो करूंगा।

ऐ भाई ! मैं तुम्हारे जज्बात तुम्हारे भावों की कदर करता हूं। मुझ अभागे को भी किसी हमदर्द सतपुरुष ने गले लगाया था। मैं तो निर्धन था, कालकर्म का मारा हुआ था। उस जात पाक ने मुझ पर बड़ा अहसान किया। मन की चंचलताई मुझ में भी बड़ी थी, मगर मेरी गलतियों को वे दर गुजर करते रहे। मैं जहां तक हो सकेगा ऐ भाई ! तुमको शुभ भावना अपना हित और मत देता रहूंगा, और ऐसी खबर की इंतजार करूंगा जैसे मां चाहती है कि उसका बच्चा बड़ा हो जावे अकल वाला बन जाये। कुछ दिनों साधन करो अगर गुरु स्वरूप प्रकट हो जाय तो वह जो स्वरूप तुम्हारे अंतर में प्रगट होगा वह तुमको शांति खुशी व सिद्धि शक्ति देगा।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

साधन में जो कुछ आपको दृष्य नज़र आएं व विचार पैदा हों उनको हर रोज एक डायरी में नोट किया करो। कोई बात छिपाना नहीं। एक महीना या ४० दिन के बाद वह डायरी या नकल मुझको भेज दिया करो। इस बात का ख्याल रहे कि तुमने गृहस्थ को नहीं त्यागना सिर्फ पत्नी की इच्छा पर रहना है और यह पत्र अपनी पत्नी को भी आवश्यक भाग पढ़कर सुना देना।

आपका फकीर।

शक्ति की रक्षा

लेखक :- सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़।

दसम्बर 1975 के मानव मन्दिर में एक लेख "शक्ति की रक्षा" छपा था। इसमें नीचे की भूल हो गई। अब यहां पर लिखा जाता है। शक्ति की रक्षा के लेख के साथ इसको पढ़िये :-

सब पशु न जाने हुये, बिना समझे, बिना समझाये हुये, बिना सिखाये एक नियम का पालन करते हैं इस नियम के पालन से इनके बच्चे अरोग्य पैदा होते हैं। कभी बीमार नहीं हुये। आयुभर स्वस्थय का मज़ा लेते हैं। यह नियम है कि समय से पहले वे भोग नहीं करते। दूसरे केवल एक बार ही भोग करते हैं। दोबारा भोग नहीं करते। यह एक प्रकृतिक नियम है जिसका पालन सब मनुष्य जाति को करना चाहिए। इस नियम के पालन करने से शुद्ध श्रेष्ठ और अरोग्य सन्तान पैदा होगी और ऐसे बच्चे को कोई बीमारी आयुभर तंग न करेगी और सारी आयु स्वस्थय बना रहेगा। मासिक धर्म के तीसरे

पांचये या सातवें दिन ब्रह्म मूहर्त में भोग करना चाहिए। यदि स्त्री गर्भवती नहीं हुई तो दूसरे महीने मासिक धर्म के बाद इसी प्रकार केवल एक वार भोग करना होगा। यदि स्त्री गर्भवति हो जाये तो फिर भोग बिल्कुल बन्द कर देना चाहिए। जब तक बच्चा अपनी माता का दूध पीता है स्त्री से भोग नहीं करना चाहिऐ क्योंकि ऐसे भोग का प्रभाव दूध पीते बच्चें पर हो ज़ाया करता है। यह अज़माई हुई बात है। मासिक धर्म में भोग हानिकारक है। बच्चों में पांच साल का समय अवश्य होना चाहिए। इससे हालात अच्छे वने रहते हैं। गर्भवति स्त्री से भोग करने से जो बच्चा पैदा होगा वह प्रथम तो रोगी होगा अन्यथा व्यभचारी होगा। दूध पीते बच्चे पर भी भोग का प्रभाव यही हुआ करता है।

नारी को छाया पड़त अन्धे होत भुजंग।
कबीर तिन की कौन गाति, जो नित नारी के संग ॥
नारी आई अपनी भोगे नर के जाय ॥
आग आग सब एक सी- हाथ दिये जलाये।
भक्ति वगाड़ी कमियां, अन्दर न करे स्वाद ॥
हीरा खोया हाथ से, जन्म गंवाया बाद ॥

सब को राधास्वामी।

मेरा कर्म

कल सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चेरीटेवल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा किआंखो का अस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिये काम से कम 125000/- रूपया की धन राशी प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा कि ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुएें में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझ को बचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी। वह तलाश मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी मराराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति ने मेरी उस तलाश को मिटाने के लिये मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब में पंथ में आया था तो मेंने भी यह प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने भी फरमाया था कि चोला छोड़ने के पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या गलत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु

होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू न गुरु न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने के लिये विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

लेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की अवाज उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिये और दुनियाँ को पीछे लगानेके लिये कही गई, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया कि जब तक मनुष्य जीवन है वह प्रसपर प्रेम सहायता और सेवा के अधीन हैं। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान, प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिये मैंने मन्दिर में यथा शक्ति अनाथों, अन्धों और गरीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होमयौपैथक, दांतों और आँखों का अस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते हैं, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इन लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उन के लिये भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हसाब बताय तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता, जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उन की सहायता करता है, मरने समये ले जाता है और दवाईये

बताता है, भारत वर्ष में ही नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता, मान चाहता, ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्यकताबें जो मानवता मन्दिर में छपती है मेंने उन का कोई मुल्य नहीं रखा। मन्दिर के हसाब में प्रकाशन पर इस वर्ष के दस महीनों में 27000/- रूपया व्यय हो चुका है विना मुल्य साहित्य वाटने का कारण मेरा ब्राह्मण के घर का जन्म है ब्राह्मण के लिये वेद बेचनापाप है। क्योंकि कताबों में जोकुछ लिखता हू वह मेरा अनुभव हैं। इस लिये मैंने इस की कोई कीमत नहीं रखी। रात को सोचा कि माया के चक्कर में तो तु आ गया, अब बता तू क्या करेगा ? मेरा निणंय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की अत्मायें इस वात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर का सहयता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा फेरी नहीं होती। ट्रस्ट है और विधिवत हसाब है जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूगा। अगर न चला तो अस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा वदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उन से यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है

कि पत्रिका का प्रशाशन वट रहा है। जिन की रूची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

ऐ मेरी ज़िन्दगी के बनाने वाले ? मेरे हैपने के बनाने वाले। तेरा प्रेम था। मालूम नहीं मैंने जो कुछ किया अथवा समझा, ठीक है या गलत है। मैं शरणागत हूं। जिस रास्ते तेरी मौज है उसी रास्ते से मुझें ले चल। अब उस दिन की प्रतिक्षा करता हूं जब अपनी हस्ती को खोकर उसी परम तत्व में चला जाऊं।

फकीर।